जाता है। एकादश पाठों से ब्रह्महत्या के पातक से मुक्त होता है तथा गर्भहनन के पातक से मुक्त हो जाता है। बारह पारायण करने पर पूर्वजन्म में किये गये सभी प्रकार के पापों से भी मुक्ति मिल जाती है तथा वह स्वर्गलोक को चला जाता है, पिता-माता के साथ स्वर्गलोक को जाता है।

यदि वह बारह पाठ करने वाला व्यक्ति अग्निष्टोम आदि यज्ञों को सम्पन्न करता है तो वे यज्ञ सफल होते हैं। सदैव वेदाध्यायी रहना चाहिये। सत्य वाणी बोलता रहे, पवित्र वाणी बोलता रहे तो वह जो-जो चाहेगा, वह-वह सब वेदपाठ से प्राप्त होगा। उसके लिये कुछ भी असाध्य तथा असम्भव नहीं रहेगा। ब्रह्माजी उसे महान् फल प्रदान करते हैं। समाप्ति पर यजुषों का तर्पण करना चाहिये। समस्त वेदों के पारायण के समाप्त होने पर जो देवता ऊपर बताये जा चुके हैं—अग्नि, सोम आदि, उनका यजुषों से तर्पण करना चाहिये। यजुर्वेद के साथ उनका तर्पण करना अभीष्ट है।

यजुर्वेद के पारायण में उस वेद का प्राधान्य नहीं कहा गया है (माना जाता है)। अथवा भूरादि व्याहृति-चतुष्टयात्मक का ग्रहण यजु: शब्द से किया जाता है। उसी को यजुष कहा जाता है, उसी से तर्पण तथा उन्हीं का तर्पण करना चाहिये। 'भूर्देवांस्तर्पयामि' ऐसा कहकर तर्पण करके अग्नि, सोम आदि देवों का तर्पण करे (ॐ भू: अग्निं तर्पयामि, ॐ भू: सोमं तर्पयामि इत्यादि)। इस पारायण काल में जनन-मरण आदि अशौच पाठकर्ता को नहीं होता है।

सामान्यतः सर्वपुराणेतिहासश्रवणविधानम्

अथ पुराणादिपारायणविधानं पाद्मे पातालखण्डे—

शुक्लपक्षे दिने शुद्धे वारनक्षत्रयोगतः। करणे चापि लग्ने च ग्रहताराबलान्विते॥ १॥
अमूढे न ग्रहे बाले न च वृद्धौ गुरौ स्थिते। न कृष्णपक्षे ग्रहणे न च नास्तिकसन्निधौ॥ २॥
शुद्धगेहेऽथ वा शुद्धवेदिकायां मठेऽथ वा। नदीतीरे देवगेहे सभामण्डप एव च॥ ३॥
रथ्यामठेऽथवा रम्ये पुण्यशालासु राघव। पूर्वोक्तलक्षणोपेतं पुराणं शृणुयादिति॥ ४॥
स्वयं नमस्य विप्रेन्द्रान्पुराणज्ञं विशेषतः। आसनं कल्पितं कुर्यादूर्ध्वं सर्वविशेषितम्॥ ५॥
एहि धर्म्मासनमिति वक्तव्यं स्यादनिष्ठुरम्। पुराणप्रक्रमदिने यत्कार्यं तदुदीरयेत्॥ ६॥
व्याख्यातारं पुराणस्य वस्त्राद्यैः परिपूजयेत्। शुभानि दत्त्वा वस्त्राणि सूक्ष्माणि च नवानि च॥ ७॥
करकण्ठविभूषादि पात्रमासनमेव च। गन्धपुष्पाक्षतैः पूज्यं ताम्बूलं विनिवेद्य च॥ ८॥
शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥ ९॥

पुराणादि पारायण-विधान—अब यहाँ पद्मपुराण के पाताल खण्ड के अनुसार पुराणादि (पुराण, उपपुराण, रामायण, महाभारत) के पारायण की विधि दी जा रही है। शुक्लपक्ष की तिथि में दिन के समय शुद्ध वार, नक्षत्र, करण तथा लग्न में ग्रह, तारा का बल देखकर; गुरु, शुक्र, मङ्गल, बुध आदि ग्रह (वेद का स्वामी ग्रह) अस्त न हो, कृष्णपक्ष न हो तथा नास्तिक की समीपता न हो; शुद्ध घर में अथवा शुद्ध वेदी (चबूतरे) पर अथवा देवालय या मठ में, नदीतीर पर अथवा सभामण्डप में अथवा मुख्य मार्ग के किनारे स्थित मठ में, रमणीय पुण्यशाला में पूर्वोक्त लक्षणों से युक्त पुराण को सुनाना-सुनना चाहिये। यजमान द्वारा स्वयं ही पुराणज्ञ विप्रेन्द्र को प्रणाम करके ऊँचा आसन बनाकर सबसे विशिष्ट मान कर 'आइये यह धर्मासन है, इस पर बैठिये और आज क्या-क्या कार्य होना है? वह बताने की कृपा करें' ऐसा विनम्र शब्दों में कहना चाहिये। पुराण के व्याख्याता का वस्त्रादि से पूजन

करना चाहिये। उसे शुभ पवित्र नवीन वस्त्र देना चाहिये। साथ ही हाथ एवं कण्ठ के आभूषण भी देना चाहिये। पात्र-आसन आदि देना चाहिये तथा गन्ध, पुष्प, अक्षतों से पूजन कर ताम्बूल का निवेदन करना चाहिये। शुक्ल वस्त्रधारी विष्णु, जो कि चन्द्रमा के समान वर्ण वाले, चतुर्भुज तथा प्रसन्नवदन हैं, उनका ध्यान करना चाहिये, जिससे सभी विघ्नों की शान्ति हो॥ १-९॥

सभासदश्च सम्पूज्य गणेशं पूजयेत्ततः। ॐ नमेत्यादिमन्त्रेण पूजनं भारतीनुतिः॥ १०॥
प्रातःकाले पुराणस्य प्रक्रमं प्रारभेदिति। उपक्रमदिने राम त्रिपंच दश वा पुनः॥ ११॥
श्लोका द्वितीये दिवसे ततो द्विगुणिताः शुभाः। तृतीये दिवसे राम ततश्चाधिकमिष्यते॥ १२॥
दिनानामव्यवच्छेदाद्व्याख्यानं श्रवणं तथा। व्यवस्थितिर्यदा जाता तदा पौराणिकं गुरुम्॥ १३॥
ताम्बूलादि प्रदायाथ परेद्युः शृणुयादपि। पुराणमेवं श्रोतव्यं दैनन्दिनमिति श्रुतिः॥ १४॥
व्रतरूपेण यः कश्चित्पुराणं शृणुयान्नरः। यदैवं तत्पुराणं तु तत्र याति न संशयः॥ १५॥
पुराणं श्रोतुकामेन श्लोकश्चैकोऽपि चेच्छ्रुतः। तद्दिने तु कृतं पापं नाशयेत्तु न संशयः॥ १६॥

देव के सभासदों का पूजन कर फिर गणेशजी का 'ॐ नमो' इत्यादि मन्त्र से पूजन तथा प्रार्थना करनी चाहिये। प्रातःकाल पुराण का व्याख्यान प्रारम्भ करना चाहिये। प्रथम दिन तीन, पाँच अथवा दश श्लोक का व्याख्यान करना चाहिये। दूसरे दिन उससे दुगुनी संख्या में श्लोकों का व्याख्यान करना चाहिये। तृतीय दिवस उससे अधिक होना चाहिये। जब कथा व्यवस्थित हो जाय तब दिनों का व्यवच्छेद (नागा) न करते हुए कथा सतत् चलनी चाहिये। अन्त में पौराणिक गुरु को ताम्बूल आदि प्रदान करके फिर अगले दिन श्रवण करना चाहिये। इस प्रकार प्रतिदिन (पुराणसमाप्ति-पर्यन्त) कथा-श्रवण करना चाहिये। जो व्यक्ति व्रत के रूप में कथा सुनता है, वह उस पुराण के अधिष्ठाता देवता (शिव-विष्णु-शक्ति) आदि के लोक को ही (देहान्त होने पर) जाता है; इसमें संशय नहीं है। पुराण सुनने की आकांक्षा के साथ जिसने एक श्लोक भी सुना हो तो उस दिन का उसका किया हुआ पाप सुनिश्चित ही नष्ट हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं है॥ १०-१६॥

एवं पुराणं शृणुयाच्च यस्तु स ब्रह्महत्याकृतपापबन्धनात्।
सुरापीतिः स्वर्णहरश्च राम गुर्वङ्गनागश्च विमुक्तिमेति॥ १७॥

भारतश्रवणे चापि नियमा ये मयेरिताः। आदिपर्वसमाप्तौ च सूक्ष्मवस्त्रत्रयं ददेत्॥ १८॥
सुवर्णं च यथाशक्ति सभापर्वणि वाससी। अनुशासनिकारण्यस्वर्गारोहेषु पर्वसु॥ १९॥
आदिपर्वणि पूजा या सा पूजा नृपपुङ्गव। कर्णाश्वमेधवैराट्शल्यद्रोणेषु पर्वसु॥ २०॥
सूक्ष्मवस्त्रत्रयं शुद्धं निष्कद्वयमथापि वा। क्षुद्रपर्वस्वथान्येषु निष्कावथ समानयेत्॥ २१॥
हरिवंशे सनिष्कं तु वस्त्रत्रितयमेव च। भारतस्याखिलस्यैव समाप्तौ क्षेत्रदो भवेत्॥ २२॥
रामायणस्य श्रवणे काण्डे काण्डे प्रपूजयेत्। क्षेत्रं पर्याप्तमथवा सुवर्णमपि दापयेत्॥ २३॥
अन्यान्यपि पुराणानि मुनिप्रोक्तानि तान्यपि। श्रोतृणां पापनाशाय वक्तुश्चापि विशेषतः॥ २४॥
यश्च सर्वपुराणानि षट्त्रिंशत्तु प्रकीर्त्तयेत्। शृणोति वा न तस्यास्ति चित्तच्छेदः कदाचन॥ २५॥

इति सामान्यतः सर्वपुराणेतिहासानां श्रवणविधानम्।

इस प्रकार की कथा जो सुनता है, वह ब्रह्महत्या के पाप से छूट जाता है। सुरापान करने वाला, गुरुपत्नी से गमन करने वाला भी मुक्त हो जाता है। महाभारत की कथा सुनने के लिये भी मैंने यही नियम कहे हैं। आदिपर्व

की समाप्ति पर तीन सूक्ष्म वस्त्र वक्ता को देना चाहिये। सभापर्व की समाप्ति पर यथाशक्ति सुवर्णदक्षिणा देनी चाहिये तथा अनुशासनपर्व, वनपर्व एवं स्वर्गारोहणपर्व की समाप्ति पर वस्त्र देना चाहिये। हे नृपपुङ्गव! आदिपर्व में वक्ता की जो पूजा कही गई है, वही पूजा कर्णपर्व, अश्वमेध पर्व, विराट् पर्व, शल्यपर्व, द्रोणपर्व में भी करनी चाहिये। अन्य जो छोटे-छोटे पर्व हैं, उनकी कथासमाप्ति पर दो सूक्ष्म वस्त्र एवं दो निष्क सुवर्ण देना चाहिये। इन सब पर्वों में निष्कदक्षिणा समान है। हरिवंश-श्रवण में सनिष्क तीन वस्त्रों की दक्षिणा देनी चाहिये। जब सम्पूर्ण महाभारत की कथा पूरी हो जाय तब क्षेत्रदान (खेत का दान) करना चाहिये। रामायण (वाल्मीकि-आनन्द आदि) के श्रवण में हर काण्ड में पूजा करनी चाहिये। उसमें पर्याप्त मात्रा में कृषिभूमि अथवा सुवर्ण अथवा दोनों ही अपनी शक्ति के अनुसार देना चाहिये। अन्यान्य भी जो पुराण-उपपुराण मुनियों द्वारा कथित हैं, उनके श्रवण में अपने पापनाश करने के लिये वक्ता को विशेष रूप से दान करना चाहिये। सम्पूर्ण पुराण, जिनकी संख्या छत्तीस कही गई है, उन सभी को जब तक नहीं सुन लेता है तब तक श्रोता के मन का संशय समाप्त नहीं होता है॥ १७-२५॥

श्रीमद्भागवतपारायणविधानम्

पाद्मे—

श्रीपार्वत्युवाच—

स्कन्धैर्द्वादशभिः प्रोक्तं श्रीमद्भागवतं प्रभो। शुकस्तच्छ्रावयामास महाराजं परीक्षितम्॥ १॥
सप्ताहेनेति भगवञ्छ्रूयते तत्र तत्र ह। तस्यानुक्रममिच्छामि श्रोतुं तत्फलमेव च॥ २॥

श्रीमद्भागवत सप्ताह-पारायण विधि (पद्मपुराण के अनुसार)—पार्वती जी बोलीं—हे प्रभो! श्रीमद्भागवत बारह स्कन्धों की कही गयी है। शुकदेव जी ने उसे राजा परीक्षित को एक सप्ताह में सुनाया था, अतः उसका अनुक्रम सुनने की इच्छा है तथा उसका क्या फल होता है, यह भी सुनना चाहती हूँ॥ १-२॥

सदाशिव उवाच—

साधु पृष्टं महाभागे लोके यत्प्रचरिष्यति। पारायणमिति ख्यातं सद्यो मुक्तिप्रदं नृणाम्॥ ३॥
शुकस्योक्तिक्रमेणैव पठेद्भागवतं तु यः। श्रावयेच्छृणुयाद्वापि तस्यानन्तं फलं भवेत्॥ ४॥
कृतनित्यक्रियः प्रातः कुशहस्तः कृतासनः। देवद्विजगुरून्नत्वा ध्यात्वा विष्णुं सनातनम्॥ ५॥
द्वैपायनं नमस्कृत्य शुकदेवं च भक्तितः। हिरण्याक्षवधं यावत्प्रथमेऽहनि कीर्त्तयेत्॥ ६॥
चरितं भरतस्यापि द्वितीयेऽथ तृतीयके। मथनं चामृतस्यापि यत्र कूर्मः स्वयं हरिः॥ ७॥
चतुर्थदिवसे चैव दशमे हरिजन्म च। पञ्चमे तु पठेद्विद्वान् रुक्मिण्या हरणावधि॥ ८॥
षष्ठे चोद्धवसंवादं सप्तमे तु समापयेत्। अध्यायं प्राप्य विरमेन्न तु मध्ये कदाचन॥ ९॥

श्री सदाशिव बोले—हे महाभागे! आपने बहुत ठीक पूछा है। यह कथा लोक में प्रचारित होगी, इसका पारायण मनुष्यों को शीघ्र ही मुक्ति देने वाला है। जो शुकदेव जी के बताये क्रम से भागवत पढ़ता है अथवा सुनता है, उसे अनन्त फल की प्राप्ति होती है। प्रातःकाल नित्यक्रिया से निपटकर हाथ में कुश लेकर आसन पर बैठकर देव, द्विज, गुरु को प्रणाम करके तथा विष्णु का ध्यान करके, द्वैपायन व्यास को नमस्कार करके तथा भक्तिपूर्वक शुकदेवजी को प्रणाम करके प्रथम दिन प्रारम्भ से हिरण्याक्षवध-पर्यन्त कथा कहनी चाहिये। द्वितीय दिवस में भरत के चरित्र तक कथा कहे। तृतीय दिन समुद्रमन्थन तक की कथा कहे, जिसमें स्वयं श्रीहरि कूर्म बने थे। चौथे दिन

दशम स्कन्ध में कृष्णजन्म तक की कथा तथा पाँचवें दिन विद्वान् रुक्मिणीहरण-पर्यन्त कथा कहे। छठे दिन उद्धव-संवाद तक तथा सातवें दिन कथा का समापन करे। अध्याय पर ही विश्राम देना चाहिये, मध्य में विराम नहीं करना चाहिये॥ ३-९॥

कृते विरामे मध्ये तु अध्यायादिं पठेत्पुनः। पठेदर्थं बुध्यमानः श्रावयेद्वैष्णवोत्तमे॥ १०॥
श्रोता तु प्राङ्मुखो भूत्वा शृणुयाद्भक्तितत्परः। अध्याये स्वर्णमाषैकं तथा दद्याच्च दक्षिणाम्॥ ११॥
समाप्तौ च ततो धेनुं स्वर्णशृङ्गीं निवेदयेत्। कुर्य्याच्च वैष्णवं होमं सात्वतान्भोजयेत्ततः॥ १२॥
एवं यः कुरुते देवि पाठं भागवतस्य तु। श्रवणं श्रावणं वापि इष्टां गतिमवाप्नुयात्॥ १३॥
एतत्पारायणं नाम सर्व्वकामफलप्रदम्। पाठकाले च त्रिदशा मुनयश्च तपोधनाः॥ १४॥
पार्श्वदाश्च तथा विष्णोः सान्निध्यं तत्र कुर्व्वते। एतत्ते कथितं देवि पारायणविधानकम्॥ १५॥
विष्णुप्रीतिकरं पुण्यं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि॥ १६॥

इति श्रीमद्भागवतपारायणविधानम्।

यदि मध्य में विराम हो जाय तो उस अध्याय को पुनः पढ़ना चाहिये। अर्थ को समझते हुए पढ़ना चाहिये तथा उत्तम वैष्णव को कथा सुनानी चाहिये। श्रोता को पूर्वमुख होकर कथा सुननी चाहिये तथा भक्तियुक्त होकर कथा सुननी चाहिये। अध्याय की समाप्ति पर वक्ता को एक मासा स्वर्ण देना चाहिये। समाप्ति पर स्वर्णशृङ्गी धेनु का दान करना चाहिये। वैष्णव होम करके सात्वतों (वैष्णवों) को भोजन कराना चाहिये। जो इस प्रकार से भागवत का पाठ करता है, श्रवण-श्रावण करता है, उसे इष्ट गति प्राप्त होती है। यह पारायण सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। पाठकाल में देवता तथा तपस्वी मुनिगण एवं विष्णु के पार्षद वहाँ आते हैं। हे देवि! यह मैंने तुमसे पारायण-विधि कही है, यह विष्णु के लिये प्रिय तथा पुण्य फलप्रद है; अब और क्या सुनना चाहती हो॥ १०-१६॥

सप्रयोगश्रीमद्भागवतसप्ताहविधिः

अथ श्रीमद्भागवतसप्ताहविधानं सप्रयोगं पाद्मे उत्तरखण्डे—

अथ ते सम्प्रवक्ष्यामः सप्ताहश्रवणे विधिम्। येन भागवतं सिद्ध्येत्पुंसां कृष्णार्पितात्मनाम्॥ १॥
दैवज्ञं शास्त्रकुशलं समाहूय धनांशुकैः। समभ्यर्च्य मुहूर्त्तं तु प्राक्पृच्छेद्भक्तिमान्नरः॥ २॥
स वदेद्यं मुहूर्त्तं तु तत्रारम्भः प्रशस्यते। नभोनभस्येषोर्जाश्च सहःशुचिसमन्विताः॥ ३॥
मासाः श्रेष्ठाः कथारम्भे पूर्णा चापि तिथिः शुभाः। भौमार्किवर्जिता वारा भानि ध्रुवमृदूनि च॥ ४॥
शुभे योगे शुभे लग्ने प्रारम्भः शस्यते सदा। तीर्थे वापि वने वापि ग्रामे वापि गृहेऽपि वा॥ ५॥
संशोधितायां भूम्यां तु मण्डपं परिकल्पयेत्। कदलीस्तम्भसंयुक्तं चतुर्दिक्षु ध्वजान्वितम्॥ ६॥
उच्चमासनमप्युक्तं वक्तुस्तस्याग्रतो मुने। अपार्श्वद्वयमुक्तानि श्रोतृणामासनानि च॥ ७॥
उदङ्मुखो भवेद्वक्ता श्रोता वै प्राङ्मुखस्तदा। प्राङ्मुखो वा भवेद्वक्ता श्रोना चोदङ्मुखस्तदा॥ ८॥

श्रीमद्भागवत सप्ताह-विधान प्रयोगसहित—(पद्मपुराण के उत्तरखण्ड के अनुसार)—अब मैं सप्ताहश्रवण की विधि कहता हूँ, जिससे श्रीमद्भागवत कृष्णार्पित चित्त वाले लोगों से सिद्धि देती है। शास्त्रकुशल दैवज्ञ (ज्योतिषी) को बुलाकर धन एवं वस्त्रों से सम्मानित करके भक्तिमान् मनुष्य को श्रीमद् भागवत पुराण का मुहूर्त पूछना चाहिये। वह जिस मुहूर्त को बताये, वही श्रेष्ठ होता है। श्रावण, भाद्र, क्वार, कार्तिक, मार्गशीर्ष तथा आषाढ़—

ये मास कथारम्भ में विशेष श्रेष्ठ हैं। पूर्णा तिथियाँ (५-१०-१५) शुभ हैं। मङ्गल तथा शनिवार को छोड़कर अन्य वार शुभ हैं। ध्रुव नक्षत्र (तीनों उत्तरा, रोहिणी), मृदुनक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा) विशेष शुभ हैं। शुभ योग तथा शुभ लग्न में कथा का प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है। तीर्थ में, ग्राम में अथवा घर में संशोधित भूमि पर केले के स्तम्भों से युक्त मण्डप बनाकर इसमें चारो ओर ध्वजा लगाना चाहिये। उसमें हे मुनि! वक्ता के लिये ऊँचा आसन लगाकर दोनों पार्श्वों को छोड़कर श्रोताओं के लिये आसन बिछाना चाहिये। वक्ता का मुख उत्तर की ओर तथा श्रोताओं का मुख पूर्व दिशा की ओर होना चाहिये। अथवा वक्ता यदि पूर्वाभिमुख बैठे तो श्रोता को उत्तराभिमुख बैठना चाहिये॥ १-८॥

वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो वैष्णवो ब्राह्मणोत्तमः। दृष्टान्तकुशलो धीरो वक्ता कार्योऽतिनिस्पृहः॥ ९॥
कथाविघ्नविघातार्थं गणेशं प्राक्प्रपूजयेत्। ततो दुर्गां हरं विष्णुं ब्रह्माणं भास्करं द्विजान्॥ १०॥
सम्पूज्य विधिवद्भक्त्या तर्पयेद्देवताः पितॄन्। मुख्यः श्रोता ततः पश्चात्पूजयेत्पुस्तके हरिम्॥ ११॥
ततः प्रदक्षिणीकृत्य द्रव्यवस्त्रफलानि च। धृत्वाञ्जलौ पुस्तकस्थं हरिं सम्प्रार्थयेन्मुने॥ १२॥

वक्ता के गुण—वक्ता वेदशास्त्रों के अर्थ एवं तत्त्व को जानने वाला होना चाहिये। वह वैष्णव तथा ब्राह्मण हो। वह दृष्टान्त में कुशल, धीर तथा निष्काम भाव से कर्म करने वाला हो। कथारम्भ में प्रथम श्रीगणेश जी की विघ्न-विनाशार्थ पूजा करनी चाहिये। फिर दुर्गा, शिव, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य तथा ब्राह्मणों की पूजा करनी चाहिये। विधिपूर्वक भक्तिभाव से देवता तथा पितरों का तर्पण करना चाहिये। फिर जो मुख्य श्रोता (यजमान) हो, वह पुस्तकरूपी हरि की पूजा करे। फिर प्रदक्षिणा करके द्रव्य, वस्त्र तथा फलों को लेकर अञ्जलि में धारण कर पुस्तकस्थ हरि की प्रार्थना करे॥ ९-१२॥

अथ प्रयोगः—पूर्वदिने चान्द्रायणधेनुदानादिद्वारा पूर्ववत्प्रायश्चित्तं सम्पाद्य प्रारम्भदिने प्रातर्नित्यकर्म कृत्वा। चन्द्रतारादिबलान्विते पूर्वोक्ते सुमुहूर्ते गोमयादिना संशोधिते कथास्थाने स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य पूर्वोक्तलक्षणयुक्तं पण्डितं च शुद्धासने उदङ्मुखमुपवेश्य आचम्य प्राणानायम्य शान्तिपाठे पठिते देशकालौ सङ्कीर्त्य 'मम इह जन्मनि जन्मान्तरं वा कृतसमस्तपापक्षयपूर्वकधर्मार्थकाममोक्षसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं ब्राह्मणद्वारा श्रीमद्भागवतसप्ताहयज्ञं करिष्ये; तदङ्गत्वेन निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये' इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं पूर्वोक्तपद्धतिकाण्डवत्सर्वं सम्पादयेत्। ततो वरणद्रव्याणि गृहीत्वा देशकालो सङ्कीर्त्य 'मम सर्वविधपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं जन्मजन्मान्तरे श्रीभगवद्भक्तिप्राप्त्यर्थं च श्रीमद्भागवतसप्ताहकथाश्रवणार्थ-ममुकगोत्रममुकवेदशाखाध्यायिनं ब्राह्मणं श्रावयितारमेभिर्द्रव्यैस्त्वामहं वृणे'। 'ॐ वृतोऽस्मीति' प्रतिवचनान्तरं वस्त्रालङ्कारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्।

शुकरूप द्विजश्रेष्ठ सर्वशास्त्रविशारद। श्रीभागवतव्याख्यानादज्ञानं मे विनाशय॥
इति सम्प्रार्थ्य वक्तारं वरयेत्पञ्च वाडवान्। द्वादशाक्षरमन्त्रस्य जपार्थं मुनिसत्तम॥

ततो देशकालौ सङ्कीर्त्य 'मम सर्वविधपातकनिवृत्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणश्रीमद्भागवतसप्ताहयज्ञ कर्मणः साङ्गतासिद्धये अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्द्रव्यैर्विष्णोर्द्वादशाक्षरमन्त्रजपकरणार्थं त्वामहं वृणे' इति वृत्वा वरणद्रव्यैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्। एवमेव गायत्रीजपार्थं विष्णुसहस्रनामजपार्थं च वृणुयात्। ततः सर्वतोभद्रमण्डले विष्णुप्रतिमां संस्थाप्य पुरुषसूक्तेन द्वादशाक्षरमन्त्रेण वा षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रदक्षिणाचतुष्टयं कृत्वा साष्टाङ्गं प्रणम्य प्रार्थयेत्।

संसारसागरे मग्नं दीनं मां करुणानिधे। कर्म्मग्राहगृहीताङ्गं मामुद्धर भवार्णवात्॥

ततः श्रीमद्भागवतपूजां षोडशोपचारैः कृत्वा वस्त्राभरणपुष्पमालाफलनैवेद्यादि निवेद्य प्रदक्षिणां कृत्वा प्रार्थयेत्।

प्रयोग—पूर्वदिन (कथारम्भ से एक दिन पूर्व) चान्द्रायण व्रत को धेनुदानादि के द्वारा सम्पन्न करके पूर्व की भाँति प्रायश्चित्त कर्म सम्पादित करके प्रारम्भ के दिन नित्यकर्म करके चन्द्र-ताराबलान्वित शुभ मुहूर्त में गोबर से लीपकर कथास्थान पर शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठे। अपने सामने उत्तर मुख करके पूर्वोक्त लक्षणों से युक्त पण्डित को भी आसन पर बैठाये। फिर आचमन तथा प्राणायाम करके शान्तिपाठ पढ़कर देश-काल का उच्चारण करके 'मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कृतसमस्तपापक्षयपूर्वकधर्मार्थकाममोक्षसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं ब्राह्मणद्वारा श्रीमद्भागवतसप्ताहयज्ञं करिष्ये; तदङ्गत्वेन निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं, नान्दीश्राद्धञ्च करिष्ये' ऐसा सङ्कल्प कर गणपतिपूजनादि नान्दीश्राद्धान्त पूर्वोक्त पद्धतिकाण्ड में वर्णित सभी कर्मों को सम्पादित करे। फिर वरण द्रव्य लेकर देश-काल का उच्चारण कर 'मम सर्वविधपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च श्रीमद्भागवत-सप्ताहकथाश्रवणार्थममुकगोत्रममुकवेदशाखाध्यायिनं ब्राह्मणं श्रावयितारमेभिर्द्रव्यैः त्वामहं वृणे' ऐसा कहकर आचार्य का वरण करे। आचार्य 'वृतोऽस्मि' ऐसा प्रतिवचन कहे। फिर प्रतिवचनानन्तर आचार्य को वस्त्रालङ्कार से पूजकर प्रार्थना करे। 'हे शुकरूप द्विजश्रेष्ठ सर्वशास्त्रविशारद! आप श्रीमद्भागवत के व्याख्यान द्वारा मेरे अज्ञान को दूर करें।' ऐसा कहकर फिर पाँच ब्राह्मणों का वरण करे। वे द्वादशाक्षर मन्त्र का जप करें। फिर देश-काल का संकीर्त्तन करके 'मम सर्वविधपातकनिवृत्तिद्वारा---------------- त्वामहं वृणे' इत्यादि मूलोक्त संकल्प पढ़कर पाँच ब्राह्मणों का वरण करे। उनको सामग्री से पूजित करके प्रार्थना करे। इसी प्रकार गायत्री-जपार्थ तथा विष्णुसहस्रनाम के जप के लिये भी ब्राह्मणों का वरण करे।

फिर सर्वतोभद्रमण्डल पर विष्णुप्रतिमा स्थापित करके पुरुषसूक्त से या द्वादशाक्षर मन्त्र से षोडशोपचार से उसका पूजन कर चार प्रदक्षिणा करके साष्टाङ्ग प्रणाम कर प्रार्थना करे—हे हृदयानिधि! मैं संसार सागर में मग्न हूँ, दीन हूँ, मेरा उद्धार कीजिये। मेरा अङ्ग कर्मरूपी ग्राह ने पकड़ लिया है, उससे बचाइये।' फिर भागवत की पूजा षोडशोपचार से करके वस्त्राभरण, पुष्पमाला, फल, नैवेद्य आदि निवेदित कर प्रदक्षिणा करके प्रार्थना करे।

श्रीमद्भागवताख्यस्त्वं प्रत्यक्षः कृष्ण एव हि। स्वीकृतोऽसि मया नाथ मुक्त्यर्थं भवसागरे॥ १॥
मनोरथो मदीयोऽयं सफलः सर्वथा त्वया। निर्विघ्नेनैव कर्त्तव्यो दासोऽहं तव केशव॥ २॥
एवं दीनं वचः प्रोक्त्वा वक्तारं चापि पूजयेत्। सम्भूष्य वस्त्रभूषाभिः पूजान्ते तं च संस्तवेत्॥ ३॥
ब्राह्मणान्वैष्णवाञ्चान्यांस्तथा कीर्त्तनकारिणः। नत्वा सम्पूज्य दत्त्वार्घ्यं स्वयमासनमाविशेत्॥ ४॥
लोकचिन्ताधनागारपुत्रचिन्ताच्युतश्च यः। कथाचिन्ताशुद्धमतिः स लभेत्फलमुत्तमम्॥ ५॥

श्रीमद्भागवत नाम प्रत्यक्ष कृष्ण ही है; इस भवसागर से मुक्ति के लिये मैं आपको स्वीकार करता हूँ। मेरा यह मनोरथ आपके द्वारा सर्वथा सफल हो। आप इसे निर्विघ्न सम्पन्न करायें। हे केशव! मैं आपका दास हूँ। इस प्रकार की दीन वाणी से वक्ता का भी पूजन करे। वस्त्र भूषा देकर फिर उससे प्रार्थना करे। वहाँ पर जो ब्राह्मण-वैष्णव आदि कीर्तनकारी हों, उन सबको प्रणाम एवं पूजन करके तथा अर्घ्य देकर अपने आसन पर बैठे। लोकचिन्ता, पुत्रचिन्ता, धनचिन्ता, घर की चिन्ता को त्यागकर जो केवल भगवान् की चिन्ता करता हुआ कथाश्रवण करता है, उसे उत्तम फल मिलता है॥ १-५॥

आसूर्योदयमारभ्य सार्द्धं त्रिप्रहरान्तकम्। वाचनीया कथा सम्यग्धीरकण्ठं सुधीमता॥ ६॥
कथाविरामः कर्त्तव्यो मध्याह्ने घटिकाद्वयम्। कथावसाने कर्त्तव्यं कीर्त्तनं केशवस्य च॥ ७॥
उपवासः प्रकर्त्तव्यः श्रोतृभिस्तत्फलेप्सुभिः। तदशक्तौ हविष्यान्नं सकृत्स्वल्पं समाहरेत्॥ ८॥
जलेनापि फलेनापि दुग्धेन च घृतेन वा। केवलेनैव कर्त्तव्यं निर्विघ्नं धारणं तनोः॥ ९॥
ब्रह्मचर्यमधःसुप्तिः पत्रावल्यां च भोजनम्। कथासमाप्तौ भुक्तिं च कुर्य्यान्नित्यं कथाव्रती॥ १०॥
कामं क्रोधं मदं लोभं दम्भं मात्सर्यमेव च। मोहं द्वेषं तथा हिंसां निन्दा चापि विवर्जयेत्॥ ११॥
सत्यं शौचं दयां मौनमार्जवं विनयं तथा। मनःप्रसन्नतां चापि बुधः कुर्यात्कथाव्रती॥ १२॥

कथा का नियम—सूर्यादि से प्रारम्भ कर साढ़े तीन प्रहर-पर्यन्त सम्यक् धीर कण्ठ से कथा कहनी चाहिये। मध्याह्न में दो घटी के लिये कथा में विराम करना चाहिये। कथा की समाप्ति पर श्री विष्णु का कीर्तन करना चाहिये। इसका फल चाहने वाले श्रोताओं को उपवास रखना चाहिये। उसमें असमर्थता होने पर हविष्यान्न का भोजन करना चाहिये, वह भी अल्पमात्रा में एक ही बार करना चाहिये। जल से, फल से, दुग्ध से अथवा घृत से निर्विघ्नतापूर्वक शरीर को धारण करना चाहिये। ब्रह्मचर्य का पालन, भूमि पर शयन, पत्तल में भोजन कथासमाप्ति के बाद ही कथाव्रती को नित्य करना चाहिये। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, दम्भ, मात्सर्य, द्वेष, हिंसा, निन्दा—इन सबको छोड़ देना चाहिये। सत्य, शौच, दया, मौन, आर्जव (ईमानदारी), विनय, मन की प्रसन्नता—इनको कथाव्रती को धारण करना चाहिये॥ ६-१२॥

श्रीकामस्तनयार्थी च जयकामश्च मोक्षधीः। शृणुयाद्वै भागवतं निष्कामः श्रीहरिं लभेत्॥ १३॥
दरिद्रश्च क्षयी रोगी निर्भाग्यः पापकर्म्मवान्। अनपत्यो मोक्षकामः शृणुयात्स कथामिमाम्॥ १४॥
अपुष्पा काकवन्ध्या च वन्ध्या या च मृतार्भका। स्रवद्गर्भा च या नारी तया श्राव्या प्रयत्नतः॥ १५॥

जो लक्ष्मी चाहता हो, पुत्र चाहता हो अथवा मोक्ष चाहता हो, उसे इस कथा को सुनना चाहिये अथवा जो निष्काम भाव से कथा सुनता है, उसे श्रीहरि की प्राप्ति होती है। दरिद्र, क्षयरोगी, निर्भाग्य, पापकर्मा, सन्तानहीन तथा मोक्षकामी को यह कथा सुननी चाहिये। जो स्त्री अपुष्पा, काकवन्ध्या, मृतवत्सा, स्रवद्गर्भा हो, उसे यह कथा प्रयत्नपूर्वक सुनानी चाहिये॥ १३-१५॥

सप्तमे दिवसे कुर्याल्लङ्घनं तत्समाप्तिके। वक्तुश्च पूजा कर्त्तव्या गोभूस्वर्णाम्बरादिभिः॥ १६॥
प्रसादं तुलसीं मालां श्रोतृभ्यः प्रतिपादयेत्। उत्सवश्च तथा कार्यो गीतवाद्यविशारदैः॥ १७॥
जयशब्दो नमःशब्दः शङ्खशब्दश्च गीयताम्। विप्रेभ्यो याचकेभ्यश्च वित्तमन्नं प्रदीयताम्॥ १८॥
विरक्तश्चेद्भवेच्छ्रोता गीता वाच्या परेऽहनि। गृहस्थश्चेत्तदा होमः कर्त्तव्यः कर्म्मशान्तये॥ १९॥

सप्ताह कथा पूर्ण होने के पश्चात् करणीय—सातवें दिन लङ्घन करना चाहिये तथा वक्ता की पूजा गाय, पृथ्वी, सुवर्ण तथा वस्त्रादि से करनी चाहिये। प्रसाद-तुलसी-माला श्रोताओं में बाँटना चाहिये। गीत-वाद्यविशारदों के द्वारा उत्सव होना चाहिये। नमः शब्द, जय शब्द तथा शङ्ख शब्द होना चाहिये। ब्राह्मणों तथा भिखारियों को वित्त तथा अन्न देना चाहिये। यदि श्रोता विरक्त हो तो गीता पर प्रवचन भी होना चाहिये। यह कार्य आठवें दिन हो। यदि गृहस्थ श्रोता हो तो उसकी शान्तिहेतु होम करना चाहिये॥ १६-१९॥

प्रतिश्लोकं च जुहुयाद्विधिना दशमस्य च। पायसं मधुसर्पिश्च तिलतण्डुलकान् यवान्॥ २०॥
शर्करां च प्रियालं च द्राक्षां बादामखर्जुरौ। अम्भोजानि च कर्पूरं चन्दनागुरुणी पुरम्॥ २१॥
लवङ्गं बिल्वपत्राणि सहस्रं च पृथक् हुनेत्। अथ वा हवनं कुर्याद्गायत्र्या सुसमाहितः॥ २२॥

होम-कथन—दशम स्कन्ध के प्रति श्लोक से पायस, मधु, घृत, तिल, तण्डुल तथा यवों का; शर्करा, चिरौंजी, दाख, बादाम, खर्जूर, कमल, कपूर, चन्दन, अगुरु, लवङ्ग का हवन करना चाहिये तथा एक सहस्र बिल्वपत्रों का हवन पृथक् से करना चाहिये अथवा गायत्री मन्त्र से समाहित चित्त से हवन करना चाहिये॥ २०-२२॥

तन्मयत्वात्पुराणस्य परमस्यास्य तत्त्वतः। होमाशक्तौ बुधो हौम्यं दद्यात्तत्फलसिद्धये॥ २३॥
नानाछिद्रनिरोधार्थं न्यूनताधिक्यताख्ययोः। दोषयोः प्रशमार्थं तु पठेन्नामसहस्रकम्॥ २४॥

तन्मयतापूर्वक इस परम पुराण का तत्त्वज्ञानपूर्वक श्रवण करने से होम का सामर्थ्य न होने पर भी होम का फल प्राप्त होता है। अनेक प्रकार के छिद्रों को रोकने के लिये न्यूनता तथा अधिकता के दोष के परिहारार्थ श्रीविष्णुसहस्रनाम का पाठ करना चाहिये॥ २३-२४॥

द्वादशाष्टादशा वापि श्रद्धया ह्यधिकांस्तथा। पायसेनाशयेद्विप्रान् स्वर्णं धेनुश्च दक्षिणा॥ २५॥
शक्तौ पलत्रयमितं स्वर्णसिंहं विधाय च। तत्रास्य पुस्तकं स्थाप्य लिखितं ललिताक्षरम्॥ २६॥
सम्पूज्यावाहनाद्यैस्तदुपचारैः सदक्षिणम्। वस्त्रभूषणगन्धाद्यैः पूजिताय यतात्मने॥ २७॥
आचार्य्याय सुधीर्दत्त्वा मुक्तः स्याद्भवबन्धनैः। एवं कृते विधाने च सर्वपापनिवारणे॥ २८॥
फलदं स्यात्पुराणं तु श्रीमद्भागवतं शुभम्। धर्म्मार्थकाममोक्षाणां साधनं नात्र संशयः॥ २९॥
इति ते कथितं सर्वं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि। श्रीमद्भागवतेनैव भुक्तिर्भुक्तिः प्रकाशिता॥ ३०॥

इति पाद्मे उत्तरखण्डे श्रीमद्भावत पारायणसप्ताहविधानं सप्रयोगं समाप्तम्।

सहस्रनाम के पाठों की संख्या बारह या अठारह अथवा श्रद्धा के अनुसार अधिक भी हो सकती है। इतनी ही संख्या में पायस से ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। स्वर्ण, धेनु तथा दक्षिणा भी देनी चाहिये। यदि शक्ति हो तो तीन पल भार सोने का सिंह बनवाकर उसके समीप में ललित अक्षरों में लिखी हुई पुस्तक को स्थापित कर आवाहन आदि उपचारों से उसे पूजित कर दक्षिणा, वस्त्राभूषण, गन्धादि से पूजित कर आचार्य को देकर बुद्धिमान् व्यक्ति को भव-बन्धनों से मुक्त हो जाना चाहिये। इस प्रकार का विधान सभी पापों का निवारण करने वाला होता है। यह श्रीमद्भागवत पुराण फल देने वाला तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—इन चारो पदार्थों का साधन है; इसमें कोई सन्देह नहीं है। यह आपसे सब कुछ बता दिया; अब और अधिक क्या सुनने की इच्छा है॥ २५-३०॥

विशेष विमर्श—यहाँ इस ग्रन्थ (अनुष्ठानप्रकाश) में केवल पद्मपुराण के अनुसार श्रीमद्भागवत महापुराण की पारायण-विधि दी गई है; परन्तु पुराणों, वैष्णवतन्त्रों तथा अन्य संस्कृत वाङ्मय में कामनाभेद से तथा मतान्तरों से अनेक प्रकार से पाठ एवं कथा के विश्रामस्थलों, कामनापरक सम्पुटों, सामग्रियों आदि का वर्णन उपलब्ध होता है; अतः उपयोगिता की दृष्टि से उनमें से कुछ को यहाँ दिया जा रहा है—

विभिन्न मतों से कामनापरक भेद से श्रीमद्भागवत के सप्ताह पारायण

क्रमांक	कामना	ऋषि का प्रमाण	मास एवं पक्ष	सप्ताह का दिन क्रम	से प्रारम्भ कर			इतने तक समाप्त करे			दिन भर पाठ किये गये कुल अध्यायों की संख्या	सप्ताह के अध्यायों का महायोग
					स्कन्ध	अध्याय	श्लोक	स्कन्ध	अध्याय	श्लोक		
१	धनप्राप्ति के लिये	शाशम्यायन का मत	भाद्रपद कृष्णपक्ष	प्रथम दिवस	१	१	१	४	९	अन्तिम	कुल ७१ अध्याय = एकहत्तर का पाठ	तीन सौ पैंतीस
				द्वितीय दिवस	४	१०	१	६	१३	अन्तिम	कुल ६१ अध्याय = एकसठ का पाठ	
				तृतीय दिवस	६	१४	१	९	७	अन्तिम	कुल ५२ अध्याय = बावन का पाठ	
				चतुर्थ दिवस	९	८	१	१०	३४	अन्तिम	कुल ५१ अध्याय = इक्यावन का पाठ	
				पञ्चम दिवस	१०	३५	१	१०	७३	अन्तिम	कुल ३९ अध्याय = उनतालीस का पाठ	
				षष्ठ दिवस	१०	७४	१	१०	९०	अन्तिम	कुल १७ अध्याय = सत्रह का पाठ	
				सप्तम दिवस	११	१	१	१२	१३	अन्तिम	कुल ४४ अध्याय = चौवालीस का पाठ	
२	पुत्र की प्राप्ति के लिये	वसिष्ठ ऋषि का मत	वैशाख मास	प्रथम दिवस	१	१	१	३	२४	अन्तिम	कुल ५३ अध्याय = तिरपन का पाठ	तीन सौ पैंतीस
				द्वितीय दिवस	३	२५	१	५	३	अन्तिम	कुल ४३ अध्याय = तैंतालीस का पाठ	
				तृतीय दिवस	५	४	१	७	८	अन्तिम	कुल ५० अध्याय = पचास का पाठ	
				चतुर्थ दिवस	७	९	१	१०	४	अन्तिम	कुल ५९ अध्याय = उनसठ का पाठ	
				पञ्चम दिवस	१०	५	१	१०	५५	अन्तिम	कुल ५१ अध्याय = इक्यावन का पाठ	
				षष्ठ दिवस	१०	५६	१	११	६	अन्तिम	कुल ४१ अध्याय = इकतालीस का पाठ	
				सप्तम दिवस	११	७	१	१२	१३	अन्तिम	कुल ३८ अध्याय = अड़तीस का पाठ	
३	निष्काम भाव से	श्री सूत जी का मत	कार्तिक शुक्लपक्ष	प्रथम दिवस	१	१	१	३	२०	अन्तिम	कुल ४९ अध्याय = उनचास का पाठ	तीन सौ पैंतीस
				द्वितीय दिवस	३	२१	१	५	२३	अन्तिम	कुल ६७ अध्याय = सड़सठ का पाठ	
				तृतीय दिवस	५	२४	१	७	१५	अन्तिम	कुल ३७ अध्याय = सैंतीस का पाठ	
				चतुर्थ दिवस	८	१	१	९	२४	अन्तिम	कुल ४८ अध्याय = अड़तालीस का पाठ	
				पञ्चम दिवस	१०	१	१	१०	४२	अन्तिम	कुल ४२ अध्याय = बयालीस का पाठ	
				षष्ठ दिवस	१०	४३	१	१०	९०	अन्तिम	कुल ४८ अध्याय = अड़तालीस का पाठ	
				सप्तम दिवस	११	१	१	१२	१३	अन्तिम	कुल ४४ अध्याय = चौवालीस का पाठ	
४	सङ्कटमोचन के लिये	श्री विश्वामित्र का मत	मार्गशीर्ष मास	प्रथम दिवस	१	१	१	२	१०	अन्तिम	कुल २९ अध्याय = उन्तीस का पाठ	तीन सौ पैंतीस
				द्वितीय दिवस	३	१	१	४	३१	अन्तिम	कुल ६४ अध्याय = चौंसठ का पाठ	
				तृतीय दिवस	५	१	१	६	१९	अन्तिम	कुल ४५ अध्याय = पैंतालीस का पाठ	
				चतुर्थ दिवस	७	१	१	८	२४	अन्तिम	कुल ३९ अध्याय = उनतालीस का पाठ	
				पञ्चम दिवस	९	१	१	१०	४९	अन्तिम	कुल ७३ अध्याय = तिहत्तर का पाठ	
				षष्ठ दिवस	१०	५०	१	११	३१	अन्तिम	कुल ७२ अध्याय = बहत्तर का पाठ	
				सप्तम दिवस	१२	१	१	१२	१३	अन्तिम	कुल १३ अध्याय = तेरह का पाठ	

विभिन्न ऋषियों के मत से कामनापरक भेद से श्रीमद्भागवत सप्ताह के पारायण

क्रमांक	कामना	प्रमाण	मास	सप्ताह के दिवसों का क्रम	इतने से स्कन्ध	इतने से अध्याय	इतने से श्लोक	इतने तक स्कन्ध	इतने तक अध्याय	इतने तक श्लोक	दिन भर में पठनीय कुल अध्यायों की संख्या	सप्ताह के अध्यायों का महायोग
५	विपनाश के लिये	जमदग्नि ऋषि	पौष मास में	प्रथम दिवस	१	१	१	३	१९	अन्तिम	कुल ४८ = अड़तालीस अध्याय का पाठ	तीन सौ पैंतीस
				द्वितीय दिवस	३	२०	१	५	६	अन्तिम	कुल ५१ = इक्यावन अध्याय का पाठ	
				तृतीय दिवस	५	७	१	७	१०	अन्तिम	कुल ४९ = उनचास अध्याय का पाठ	
				चतुर्थ दिवस	७	११	१	९	२४	अन्तिम	कुल ५३ = तिरपन अध्याय का पाठ	
				पञ्चम दिवस	१०	१	१	१०	४९	अन्तिम	कुल ४९ = उनचास अध्याय का पाठ	
				षष्ठ दिवस	१०	५०	१	१०	९०	अन्तिम	कुल ४१ = इकतालीस अध्याय का पाठ	
				सप्तम दिवस	११	१	१	१२	१३	अन्तिम	कुल ४४ = चौवालीस अध्याय का पाठ	
६	बन्धन से मुक्तिहेतु	भारद्वाज ऋषि का मत	माघ मास में	प्रथम दिवस	१	१	१	३	३३	अन्तिम	कुल ६२ = बासठ अध्याय का पाठ	तीन सौ पैंतीस
				द्वितीय दिवस	४	१	१	५	२६	अन्तिम	कुल ५७ = सत्तावन अध्याय का पाठ	
				तृतीय दिवस	६	१	१	७	१५	अन्तिम	कुल ३४ = चौंतीस अध्याय का पाठ	
				चतुर्थ दिवस	८	१	१	९	२४	अन्तिम	कुल ४८ = अड़तालीस अध्याय का पाठ	
				पञ्चम दिवस	१०	१	१	१०	९०	अन्तिम	कुल ९० = नब्बे अध्याय का पाठ	
				षष्ठ दिवस	११	१	१	११	३१	अन्तिम	कुल ३१ = इकतीस अध्याय का पाठ	
				सप्तम दिवस	१२	१	१	१२	१३	अन्तिम	कुल १३ = तेरह अध्याय का पाठ	
७	शत्रु को पराजित करने के लिये	गौतम के मत से	फाल्गुन मास में	प्रथम दिवस	१	१	१	३	१९	अन्तिम	कुल ४८ = अड़तालीस अध्याय का पाठ	तीन सौ पैंतीस
				द्वितीय दिवस	३	२०	१	५	१५	अन्तिम	कुल ६० = साठ अध्याय का पाठ	
				तृतीय दिवस	५	१६	१	७	१५	अन्तिम	कुल ४५ = पैंतालीस अध्याय का पाठ	
				चतुर्थ दिवस	८	१	१	१०	१२	अन्तिम	कुल ६० = साठ अध्याय का पाठ	
				पञ्चम दिवस	१०	१३	१	१०	८४	अन्तिम	कुल ७२ = बहत्तर अध्याय का पाठ	
				षष्ठ दिवस	१०	८५	१	११	३१	अन्तिम	कुल ३७ = सैंतीस अध्याय का पाठ	
				सप्तम दिवस	१२	१	१	१२	१३	अन्तिम	कुल १३ = तेरह अध्याय का पाठ	
८	रोगमुक्ति	अत्रि मुनि	चैत्र मास में	प्रथम दिवस	१	१	१	३	२०	अन्तिम	कुल ४९ = उनचास अध्याय का पाठ	तीन सौ पैंतीस
				द्वितीय दिवस	३	२१	१	५	६	अन्तिम	कुल ५० = पचास अध्याय का पाठ	
				तृतीय दिवस	५	७	१	६	१९	अन्तिम	कुल ३९ = उनतालीस अध्याय का पाठ	
				चतुर्थ दिवस	७	१	१	९	२०	अन्तिम	कुल ५९ = उनसठ अध्याय का पाठ	
				पञ्चम दिवस	९	२१	१	१०	३५	अन्तिम	कुल ३९ = उनतालीस अध्याय का पाठ	
				षष्ठ दिवस	१०	३६	१	११	६	अन्तिम	कुल ६१ = इकसठ अध्याय का पाठ	
				सप्तम दिवस	११	७	१	१२	१३	अन्तिम	कुल ३८ = अड़तीस अध्याय का पाठ	

कृत्यसारसमुच्चय के अनुसार सप्ताह कथा क्रम—

आद्ये हिरण्याक्षवधं द्वितीये भरतावधिः। तृतीये त्वब्धिमथनं चतुर्थे कृष्णजन्म च॥
पञ्चमे रुक्मिणीग्राहं षष्ठे चोद्धवसंज्ञकम्। सप्तमेऽह्नि समाप्तिः स्यात् सप्ताहमनुरब्रवीत्॥

अर्थात् प्रथम दिन हिरण्याक्षवध-पर्यन्त कथा कहें। दूसरे दिन भरतचरित्र तक कथा कहें। तीसरे दिन समुद्रमन्थन तक कथा कहें। चौथे दिन कृष्णजन्म-पर्यन्त कथा कहें। पाँचवें दिन रुक्मिणीविवाह-पर्यन्त कथा कहें। छठे दिन उद्धव-गोपी संवाद तक तथा सातवें दिन समाप्ति-पर्यन्त कथा कहनी चाहिये। तदनुसार—

प्रथम दिवस—प्रारम्भ से लेकर तीसरे स्कन्ध के १९वें अध्याय तक कुल ४८ अध्याय।

द्वितीय दिवस—तृतीय स्कन्ध के २०वें अध्याय से प्रारम्भ कर पञ्चम स्कन्ध के १५वें अध्याय तक कुल ६० अध्याय।

तृतीय दिवस—पञ्चम के १६वें अध्याय से प्रारम्भ कर अष्टम स्कन्ध के नवम अध्याय तक कुल ५४ अध्याय।

चतुर्थ दिवस—अष्टम स्कन्ध के दशम अध्याय से प्रारम्भ कर दशम स्कन्ध के तृतीय अध्याय तक कुल ४२ अध्याय।

पञ्चम दिवस—दशम स्कन्ध के चतुर्थ अध्याय से प्रारम्भ कर दशम के तिरपनवें अध्याय तक कुल ५० अध्याय।

षष्ठ दिवस—दशम के चौवनवें अध्याय से लेकर ग्यारहवें स्कन्ध के सातवें अध्याय तक कुल ४४ अध्याय।

सप्तम दिवस—ग्यारहवें स्कन्ध के आठवें अध्याय से लेकर समाप्ति तककुल ३७ अध्याय।

कौशिकसंहिता के अनुसार सप्ताह-पारायण का विधान—

सप्ताहे पाठनियमं शृण शौनक संयतः। मनुकर्दमसंवादपर्यन्तं प्रथमेऽहनि॥ १॥
ऋषभाख्यानपर्यन्तं द्वितीये दिवसे वदेत्। तृतीये दिवसे कुर्यात् सप्तमस्कन्धपूरणम्॥ २॥
कृष्णाविर्भावपर्यन्तं चतुर्थेऽहनि वाचयेत्। रुक्मिण्युद्वाहपर्यन्तं पञ्चमेऽह्नि वदेत्सुधीः॥ ३॥
श्रीहंसाख्यानपर्यन्तं षष्ठे वाचयेद् ध्रुवम्। सप्तमे दिने कुर्याच्छ्रीभागवतपूरणम्॥ ४॥

अर्थात् हे शौनक! सुनो; मैं सप्ताहपाठ के नियम को बताता हूँ। प्रथम दिन मनु-कर्दमसंवाद-पर्यन्त कथा या पाठ होना चाहिये। द्वितीय दिन ऋषभाख्यान-पर्यन्त पारायण चले। तीसरे दिन सप्तम स्कन्ध की समाप्ति तक पाठ तथा कथा चलनी चाहिये। चौथे दिन कृष्णजन्म तक कथा बाँचनी चाहिये। पाँचवें दिन रुक्मिणी जी के विवाह तक कथा चले। छठे दिन श्रीहंसाख्यान तक व्याख्यान एवं पाठ करना चाहिये तथा सातवें दिन श्रीमद्भागवत का समापन होना चाहिये।

श्रीमद्भागवत के द्वादश स्कन्धों का श्रीकृष्ण के शरीर के साथ समन्वय—

भगवान् श्रीकृष्ण के शरीराङ्गों के साथ द्वादश अङ्गों का समन्वय ग्रन्थों में इस प्रकार से वर्णित है—

पादानि जानुपर्यन्तं प्रथमस्कन्धईरित। तदूर्ध्वं कटिपर्यन्तं द्वितीयस्कन्ध उच्यते॥
तृतीयो नाभिरित्युक्तश्चतुर्थमुदरं मतम्। पञ्चमो हृदयं प्रोक्तं षष्ठः कण्ठसबाहुकम्॥
सर्वलक्षणसंयुक्तः सप्तमो मुखमुच्यते। अष्टमं चक्षुषी विष्णोः कपोलो भृकुटिपटः॥
दशमो ब्रह्मरन्ध्रश्च मन एकादश स्मृतः। आत्मा तु द्वादशः स्कन्धः श्रीकृष्णस्य प्रकीर्तितः॥

स्कन्ध	भगवान् के अंग
१. प्रथम	पाद से जानुपर्यन्त
२. द्वितीय	जानु से कटिपर्यन्त
३. तृतीय	नाभि
४. चतुर्थ	उदर
५. पञ्चम	हृदय
६. षष्ठ	कण्ठ एवं बाहु
७. सप्तम	मुख
८. अष्टम	नेत्र
९. नवम	कपोल, भृकुटि
१०. दशम	ब्रह्मरन्ध्र
११. एकादश	मन
१२. द्वादश	आत्मा

भगवान् के पैरों से लेकर घुटनों तक प्रथम स्कन्ध कहा गया है। उसके ऊपर कमर तक का भाग द्वितीय स्कन्ध है। तृतीय स्कन्ध भगवान् की नाभि तथा चतुर्थ स्कन्ध उनका उदर है। पञ्चम स्कन्ध भगवान् का हृदय तथा छठा स्कन्ध भगवान् का बाहु एवं कण्ठ है। सातवाँ स्कन्ध भगवान् का सर्व लक्षणयुक्त मुखमण्डल है तथा आठवाँ नेत्र, नवाँ भृकुटी तथा कपोल, दशम ब्रह्मरन्ध्र, ग्यारहवाँ मन तथा बारहवाँ स्कन्ध भगवान् की आत्मा है।

एक पक्ष में सप्ताह का अनुष्ठान करने का सम्प्रदाय—पद्मपुराण के निम्न श्लोक के अनुसार शुकदेव जी ने भाद्रशुक्ल नवमी से भाद्रशुक्ल पूर्णिमा तक कथा समाप्त की थी। तदनुसार कुछ विद्वानों के मत से सप्ताह कथा या पारायण का अनुष्ठान दो पक्ष में समाप्त न कर एक ही पक्ष में कर देना चाहिये—

आकृष्ण निर्गमाद् त्रिंशद् वर्षाधिकगते कलौ। नवमीतो नभस्ये च कथाऽऽरम्भं शुकोऽकरोत्॥

अर्थात् श्रीकृष्ण के गोलोक धाम जाने पर जब कलियुग के तीस वर्ष व्यतीत हो गये तब भाद्रपद शुक्लपक्ष की नवमी को श्री शुकदेव जी ने कथारम्भ (सप्ताह कथा आरम्भ) किया था; अतः उसमें सप्ताह का समापन पूर्णिमा पर हो गया था। इस वचन के अनुसार कुछ विद्वान् दो पक्ष में सप्ताह कथा चलने का निषेध करते हैं; परन्तु यह कोई अनिवार्य नियम नहीं है और न ही इसके लिये कोई धर्मशास्त्रीय निर्देश प्राप्त होता है।

सप्ताह से अधिक अवधि के श्रीमद्भागवत-पारायण के विधान

शास्त्रों में एक सप्ताह से अधिक दिनों के भी श्रीमद्भागवत महापुराण के पाठ (पारायण) अनुष्ठानादि का निर्देश है; तदनुसार दस दिन, पन्द्रह दिन, अठारह दिन तथा मासपारायण के भी निर्देश प्राप्त होते हैं।

दस दिन का पारायण श्री कश्यप मुनि के मत से आषाढ़ शुक्ल पक्ष में करणीय

दशाह पारायण दिवस क्रम	प्रारम्भ		समाप्ति		दशाह में पठनीय अध्यायों की संख्या	
	स्कन्ध	अध्याय से	स्कन्ध	अध्याय तक		
१. प्रथम दिवस	प्रथम स्कन्ध	प्रथमाध्यायतः	तृतीय स्कन्ध	षष्ठाध्यायान्त	१९+१०+६= ३५ (पैंतीस)	तीन सौ पैंतीस अध्याय
२. द्वितीय दिवस	तृतीय स्कन्ध	सप्तमाध्यायतः	चतुर्थ स्कन्ध	सप्तमाध्यायान्त	२७+७ = ३४ (चौंतीस)	
३. तृतीय दिवस	चतुर्थ स्कन्ध	अष्टमाध्यायतः	पञ्चम स्कन्ध	नवमाध्याय-पर्यन्त	२४+९ = ३३ (तैंतीस)	
४. चतुर्थ दिवस	पञ्चम स्कन्ध	दशमाध्यायतः	षष्ठ स्कन्ध	एकोनविंशाध्यायान्त	१७+१९ = ३६ (छत्तीस)	
५. पञ्चम दिवस	सप्तम स्कन्ध	प्रथमाध्यायतः	अष्टम स्कन्ध	चतुर्विंशत्यध्यायान्त	१५+२४ = ३९ (उनतालीस)	
६. षष्ठ दिवस	नवम स्कन्ध	प्रथमाध्यायतः	दशम स्कन्ध	एकादशाध्यायान्त	२४+११ = ३५ (पैंतीस)	
७. सप्तम दिवस	दशम स्कन्ध	द्वादशाध्यायतः	दशम स्कन्ध	पञ्चचत्वारिंशदध्यायान्त	= ३४ (चौंतीस)	
८. अष्टम दिवस	दशम स्कन्ध	षट्चत्वारिंशदध्यायतः	दशम स्कन्ध	एकोनशीत्यध्यायान्त	= ३४ (चौंतीस)	
९. नवम दिवस	दशम स्कन्ध	अशीति अध्यायतः	एकादश स्कन्ध	त्रयोविंशत्यध्यायान्त	११+२३ = ३४ (चौंतीस)	
१०. दशम दिवस	एकादश स्कन्ध	चतुर्विंशाध्यायतः	द्वादश स्कन्ध	त्रयोदशाध्यायान्त	८+१३ = २१ (इक्कीस)	

पञ्चदश दिवसात्मक श्रीमद्भागवत पारायण—ग्रन्थान्तरों में श्रीमद्भागवत का पारायण पन्द्रह दिनों में भी होता है, इसके दो प्रकार हैं। प्रथम प्रकार में प्रथम दिन से लेकर चौदहवें दिन तक प्रतिदिन कुल २२ अध्यायों का पाठ होता है। इस प्रकार चौदह दिनों में २२×१४=३०८ अध्याय पढ़े जाते हैं तथा पन्द्रहवें दिन शेष २७ अध्याय पढ़कर पूरा पाठ ३०८+२७=३३५ अध्याय हो जाते हैं।

प्रथम मत से पञ्चदश दिनात्मक भागवत पाठ किसी भी मास के शुक्लपक्ष में आरम्भ करणीय

पञ्चादशाह	स्कन्ध	अध्याय	से	स्कन्ध	अध्याय	तक	कुल अध्याय	दिवस	स्कन्ध	अध्याय	से	स्कन्ध	अध्याय	तक	कुल अध्याय	दिवस	स्कन्ध	अध्याय	से	स्कन्ध	अध्याय	तक	कुल अध्याय
प्रथम दिवस	एक	१	से	दो	३	तक	२२	षष्ठ दिवस	पाँच	१८	से	छठा	१३	तक	२२	एकादश	दशम	२०	से	दशम	४१	तक	२२
द्वितीय ,,	दो	४	से	तीन	१५	तक	२२	सप्तम ,,	छठे	१४	से	आठवें	१	तक	२२	द्वादश	दशम	४२	से	दशम	६३	तक	२२
तृतीय ,,	तीन	१६	से	चार	४	तक	२२	अष्टम ,,	आठवें	२	से	आठ	२३	तक	२२	त्रयोदश	दशम	६४	से	दशम	८५	तक	२२
चतुर्थ ,,	चार	५	से	चार	२६	तक	२२	नवम ,,	आठवें	२४	से	नौवें	२१	तक	२२	चतुर्दश	दशम	८६	से	एकादश	१७	तक	२२
पञ्चम ,,	चार	२७	से	पाँच	१७	तक	२२	दशम ,,	नौवें	२२	से	दशम	१९	तक	२२	पञ्चदश	एकादश	१८	से	द्वादश	१३	तक	२७

बृहस्पति के मत से ज्येष्ठ शुक्ल अथवा आषाढ़ कृष्ण में प्रथम दिन आरम्भ करणीय पञ्चादशाह भागवत अनुष्ठान चक्र

दिनक्रम	स्कन्ध	अध्याय	से	स्कन्ध	अध्याय	तक	प्रतिदिन की अध्याय संख्या	दिनक्रम	स्कन्ध	अध्याय	से	स्कन्ध	अध्याय	तक	प्रतिदिन की अध्याय संख्या
१. पहिला	प्रथम	१	से	द्वितीय	२	तक	२१	९. नौवाँ	नवम	७	से	दशम	४	तक	२२
२. दूसरा	द्वितीय	३	से	तृतीय	१५	तक	२३	१०. दशवाँ	दशम	५	से	दशम	२६	तक	२२
३. तीसरा	तृतीय	१६	से	चतुर्थ	४	तक	२२	११. ग्यारहवाँ	दशम	२७	से	दशम	४९	तक	२३
४. चौथा	चतुर्थ	५	से	चतुर्थ	२७	तक	२३	१२. बारहवाँ	दशम	५०	से	दशम	७०	तक	२१
५. पाँचवाँ	चतुर्थ	२८	से	पञ्चम	१८	तक	२२	१३. तेरहवाँ	दशम	७१	से	एकादश	२	तक	२२
६. छठाँ	पञ्चम	१९	से	षष्ठ	१५	तक	२३	१४. चौदहवाँ	एकादश	३	से	एकादश	२५	तक	२३
७. सातवाँ	षष्ठ	१६	से	अष्टम	५	तक	२४	१५. पन्द्रहवाँ	एकादश	२६	से	द्वादश	१३	तक	१९
८. आठवाँ	अष्टम	६	से	नवम	६	तक	२५			अध्यायों का कुल योग—तीन सौ पैंतीस अध्याय→					३३५

मतान्तर से श्रीमद्भागवत के अष्टादश दिनात्मक पारायण का चक्र

अठारह दिनों का क्रम	स्कन्ध के	अध्याय	से	स्कन्ध के	अध्याय	तक	दैनिक पाठ की अध्याय संख्या	अठारह दिनों का क्रम	स्कन्ध के	अध्याय	से	स्कन्ध के	अध्याय	तक	दैनिक पाठ की अध्याय संख्या
पहिला दिन	प्रथम	१	से	प्रथम	१९	तक	१९	दशवाँ दिन	अष्टम	७	से	नवम	२	तक	१८+२=२०
दूसरा दिन	द्वितीय	१	से	तृतीय	८	तक	१०+८=१८	ग्यारहवाँ दिन	नवम	३	से	नवम	२३	तक	२१
तीसरा दिन	तृतीय	९	से	तृतीय	२५	तक	१७	बारहवाँ दिन	नवम	२४	से	दशम	१४	तक	१+१४=१५
चौथा दिन	तृतीय	२६	से	चतुर्थ	८	तक	८+८=१६	तेरहवाँ दिन	दशम	१५	से	दशम	३८	तक	२४
पाँचवाँ दिन	चतुर्थ	९	से	चतुर्थ	२७	तक	१९	चौदहवाँ दिन	दशम	३९	से	दशम	५३	तक	१५
छठाँ दिन	चतुर्थ	२८	से	पञ्चम	७	तक	४+७=११	पन्द्रहवाँ दिन	दशम	५४	से	दशम	७०	तक	१७
सातवाँ दिन	पञ्चम	८	से	षष्ठ	१	तक	१९+१=२०	सोलहवाँ दिन	दशम	७१	से	एकादश	२	तक	२०+२=२२
आठवाँ दिन	षष्ठ	२	से	सप्तम	४	तक	१८+४=२२	सत्रहवाँ दिन	एकादश	३	से	एकादश	२१	तक	१९
नौवाँ दिन	सप्तम	५	से	अष्टम	६	तक	११+६=१७	अठारहवाँ दिन	एकादश	२२	से	द्वादश	१३	तक	१०+१३=२३

भागवतप्रदीप के अनुसार इक्कीस दिन के पाठ का चक्र
(प्रत्येक स्कन्ध के आदि एवं अन्त के श्लोक को दोहरा कर पढ़ना चाहिये)

दिनक्रम	स्कन्ध के	अध्याय	से	स्कन्ध के	अध्याय	तक	दैनिक पाठ के अध्याय क्रम	दिनक्रम	स्कन्ध से	अध्याय	से	स्कन्ध के	अध्याय	तक	दैनिक पाठ के अध्याय क्रम	दिनक्रम	स्कन्ध के	अध्याय	से	स्कन्ध के	अध्याय	तक	दैनिक पाठ के अध्याय क्रम
पहिला दिन	प्रथम	१	से	प्रथम	१६	तक	१६	आठवाँ दिन	पञ्चम	२०	से	षष्ठ	९	तक	७+९=१६	पन्द्रहवाँ दिन	दशम	२३	से	दशम	३९	तक	१६
दूसरा दिन	प्रथम	१७	से	तृतीय	३	तक	३+१०+३=१६	नवाँ दिन	षष्ठ	१०	से	सप्तम	६	तक	१०+६=१६	सोलहवाँ दिन	दशम	४०	से	दशम	५५	तक	१६
तीसरा दिन	तृतीय	४	से	तृतीय	१९	तक	१६	दसवाँ दिन	सप्तम	७	से	अष्टम	७	तक	९+७=१६	सत्रहवाँ दिन	दशम	५६	से	दशम	७१	तक	१६
चौथा दिन	तृतीय	२०	से	चतुर्थ	२	तक	१४+२=१६	ग्यारहवाँ दिन	अष्टम	८	से	अष्टम	२३	तक	१६	अठारहवाँ दिन	दशम	७२	से	दशम	८७	तक	१६
पाँचवाँ दिन	चतुर्थ	३	से	चतुर्थ	१८	तक	१६	बारहवाँ दिन	अष्टम	२४	से	नवम	१५	तक	१+१५=१६	उन्नीसवाँ दिन	दशम	८८	से	एकादश	१३	तक	३+१३=१६
छठाँ दिन	चतुर्थ	१९	से	पञ्चम	३	तक	१३+३=१६	तेरहवाँ दिन	नवम	१६	से	दशम	७	तक	९+७=१६	बीसवाँ दिन	एकादश	१४	से	एकादश	२९	तक	१६
सातवाँ दिन	पञ्चम	४	से	पञ्चम	१९	तक	१६	चौदहवाँ दिन	दशम	८	से	दशम	२३	तक	१६	इक्कीसवाँ दिन	एकादश	३०	से	द्वादश	१३	तक	२+१३=१५

विशेष—श्रीमद्भागवत के द्वैमासिक पारायण, षाण्मासिक पारायण तथा वार्षिक पारायण के भी विधान ग्रन्थों में उपलब्ध हैं, परन्तु एक मास से अधिक का पारायण कठिन कार्य होता है; अतः यहाँ पर केवल मासपारायण का क्रम ही आगे लिखा जा रहा है।

श्रीमद्भागवत मासपारायण अनुष्ठानक्रम-प्रदर्शक चक्र
(बृहस्पति का मत)

(१) इसे शुक्लपक्ष के अन्त में आरम्भ करे (अर्थात् कृष्ण प्रतिपदा से आरम्भ कर) शुक्लपक्ष के अन्त (पूर्णिमा तक) समाप्त करे। अथवा (२) शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ कर कृष्ण अमावास्या पर समाप्त करना चाहिये। इससे प्रजापालन (राजनैतिक सफलता) तथा अन्य सब कामनाएँ सफल होती हैं। (मतान्तर से इसे वैशाख कृष्ण पञ्चमी से ज्येष्ठ शुक्ल पञ्चमी तक करना चाहिये)।

मासपारायण के दिवस (कृष्णपक्ष)	स्कन्ध के	अध्याय	से	स्कन्ध के	अध्याय	तक	दैनिक पाठ के अध्यायों की संख्या	शुक्लपक्ष मास पारायण के दिवस	स्कन्ध के	अध्याय	से	स्कन्ध के	अध्याय	तक	प्रतिदिन की अध्याय संख्या
१. पहिला दिवस	प्रथम	१	से	प्रथम	११	तक	११	१६. सोलहवाँ दिवस	अष्टम	२	से	अष्टम	१५	तक	१४
२. दूसरा दिवस	प्रथम	१२	से	द्वितीय	२	तक	८ + २ = १०	१७. सत्रहवाँ दिवस	अष्टम	१६	से	नवम	४	तक	९ + ४ = १३
३. तीसरा दिवस	द्वितीय	३	से	तृतीय	२	तक	८ + २ = १०	१८. अठारहवाँ दिवस	नवम	५	से	नवम	१८	तक	१४
४. चौथा दिवस	तृतीय	३	से	तृतीय	१२	तक	१०	१९. उन्नीसवाँ दिवस	नवम	१९	से	दशम	६	तक	६ + ६ = १२
५. पाँचवाँ दिवस	तृतीय	१३	से	तृतीय	२३	तक	११	२०. बीसवाँ दिवस	दशम	७	से	दशम	१७	तक	११
६. छठा दिवस	तृतीय	२४	से	चतुर्थ	१	तक	१० + १ = ११	२१. इक्कीसवाँ दिवस	दशम	१८	से	दशम	३०	तक	१३
७. सातवाँ दिवस	चतुर्थ	२	से	चतुर्थ	१०	तक	९	२२. बाईसवाँ दिवस	दशम	३१	से	दशम	४२	तक	१२
८. आठवाँ दिवस	चतुर्थ	११	से	चतुर्थ	२२	तक	१२	२३. तेईसवाँ दिवस	दशम	४३	से	दशम	५४	तक	१२
९. नवाँ दिवस	चतुर्थ	२३	से	पञ्चम	१	तक	९ + १ = १०	२४. चौबीसवाँ दिवस	दशम	५५	से	दशम	६५	तक	११
१०. दशवाँ दिवस	पञ्चम	२	से	पञ्चम	१०	तक	९	२५. पच्चीसवाँ दिवस	दशम	६६	से	दशम	७८	तक	१३
११. ग्यारहवाँ दिवस	पञ्चम	११	से	पञ्चम	२०	तक	१०	२६. छब्बीसवाँ दिवस	दशम	७९	से	दशम	८७	तक	९
१२. बारहवाँ दिवस	पञ्चम	२१	से	षष्ठ	५	तक	६ + ५ = ११	२७. सत्ताईसवाँ दिवस	दशम	८८	से	एकादश	९	तक	३ + ९ = १२
१३. तेरहवाँ दिवस	षष्ठ	६	से	षष्ठ	१६	तक	११	२८. अट्ठाइसवाँ दिवस	एकादश	१०	से	एकादश	२१	तक	१२
१४. चौदहवाँ दिवस	षष्ठ	१७	से	सप्तम	७	तक	३ + ७ = १०	२९. उन्तीसवाँ दिवस	एकादश	२२	से	द्वादश	२	तक	१० + २ = १२
१५. पन्द्रहवाँ दिवस	सप्तम	८	से	अष्टम	१	तक	८ + १ = ९	३०. तीसवाँ दिवस	द्वादश	३	से	द्वादश	१३	तक	११

श्रीमद्भागवत के सप्ताह से न्यून दिनों के पारायण

ग्रन्थों में एक दिवस से लेकर छः दिवस के पारायण ऋषियों के मतानुसार लिखे गये हैं; अतः उनका भी विवरण यहाँ चक्रों द्वारा प्रदर्शित है।

एकाह पारायण
(एक दिन में)

दिवस	स्कन्ध	अध्याय	से लेकर	स्कन्ध	अध्याय तक	कुल अध्याय
एक	१	१		१२	१३	३३५

शुक्राचार्य के मतानुसार एक ही दिन में सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत के बारहों स्कन्धों का पाठ करना चाहिये। इसे श्रावण कृष्णपक्ष में किसी शुभ दिन में पञ्चाङ्गशुद्धि तथा गोचरशुद्धि देखकर साधन एवं सामर्थ्य का सञ्चय कर सम्पन्न करना चाहिये।

द्वयह्न पारायण
(दो दिनों में)

दिवस	स्कन्ध	अध्याय	प्रारम्भ	स्कन्ध	अध्याय	समाप्ति	दैनिक पाठ की अध्याय संख्या	कुल योग
प्रथम दिन	प्रथम स्कंध	१	से	नवम	१३	तक	१९०	३३५
द्वितीय दिन	नवम	१६	से	द्वादश	१३	तक	१४५	तीन सौ पैंतीस

त्रय्यारुणि ऋषि के मतानुसार श्रीमद्भागवत महापुराण का दो दिवसीय पारायण श्रावण शुक्ल पक्ष में करना चाहिये।

श्रीमद्भागवत त्र्यह पारायण

दिवस	स्कन्ध	अध्याय	प्रारम्भ	स्कन्ध	अध्याय	समाप्ति	दैनिक पाठ की अध्याय संख्या	कुल योग
पहिला	प्रथम	१	से	सप्तम	१५	तक	१५३	
दूसरा	सप्तम	१६	से	दशम	९०	तक	१३८	३३५
तीसरा	एकादश	१	से	द्वादश	१३	तक	०४४	

हारीत मुनि के मतानुसार मोक्ष चाहने वाले साधक को श्रीमद्भागवत महापुराण का त्रिदिवसीय पारायण आश्विन मास के शुक्लपक्ष में सम्पन्न करना चाहिये।

श्रीमद्भागवत चतुरह पारायण

दिवस	स्कन्ध	अध्याय	प्रारम्भ	स्कन्ध	अध्याय	समाप्ति	दैनिक पाठ की अध्याय संख्या	कुल योग
पहिला	प्रथम	१	से	चतुर्थ	१९	तक	८१	तीन सौ पैंतीस
दूसरा	चतुर्थ	२०	से	अष्टम	१७	तक	८९	
तीसरा	अष्टम	१८	से	दशम	५२	तक	८३	
चौथा	दशम	५३	से	द्वादश	१३	तक	८२	

श्री शौनक जी के मत से सर्वकामना-पूर्तिहेतु चतुर्दिवसीय पारायण भाद्रपद शुक्लपक्ष में करना चाहिये।

श्रीमद्भागवत पञ्चाह पारायण

पञ्चाह	स्कन्ध	अध्याय	प्रारम्भ	स्कन्ध	अध्याय	समाप्ति	दैनिक पारायण की अध्याय संख्या	कुल योग
१. पहिला दिन	प्रथम	१	से	चतुर्थ	७	तक	६९	
२. दूसरा दिन	चतुर्थ	८	से	षष्ठ	१९	तक	६९	
३. तीसरा दिन	सप्तम	१	से	नवम	२४	तक	६३	३३५
४. चौथा दिन	दशम	१	से	दशम	६९	तक	६९	
५. पाँचवाँ दिन	दशम	७०	से	द्वादश		तक	६५	

अकृतव्रण नामक ऋषि के अनुसार सभी कामनाओं की पूर्ति के लिये भाद्र शुक्लपक्ष में शुभ समय में श्रीमद्भागवत का पञ्च दिनात्मक पारायण करना चाहिये।

श्रीमद्भागवत षडह पारायण

षडाह दिवस	स्कन्ध	अध्याय	प्रारम्भ	स्कन्ध	अध्याय	समाप्ति	दैनिक पाठ की अध्याय संख्या	कुल योग
पहिला दिन	प्रथम	१	से	तृतीय	३२	तक	६१	तीन सौ पैंतीस
दूसरा दिन	तृतीय	३३	से	पञ्चम	१४	तक	४६	
तीसरा दिन	पञ्चम	१५	से	अष्टम	२४	तक	७०	
चौथा दिन	नवम	१	से	दशम	३९	तक	६३	
पाँचवाँ दिन	दशम	४०	से	एकादश	१९	तक	७०	
छठा दिन	एकादश	२०	से	द्वादश	१३	तक	२५	

शांशपायन मुनि के अनुसार धनप्राप्ति-कामी व्यक्ति को भाद्रपद कृष्णपक्ष में श्रीमद्भागवत का छः दिवसीय पारायण सम्पन्न करना चाहिये।

श्रीमद्भागवत के सम्पुटों द्वारा किये जाने वाले अनुष्ठान

१. ब्राह्मणों को—गायत्री मन्त्र के सम्पुट द्वारा मासपारायण अथवा पक्षपारायण करना चाहिये।

२. क्षत्रियों को—'ॐ देवसवित: प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्व: केतपू: केतन्न: पुनातु वाचस्पति वोचं न: स्वदतु' (शु. य. ११।७) इस वैदिक मन्त्र से सम्पुटित श्लोकों का पाठ करना चाहिये।

३. वैश्यों को—'ॐ विश्वारूपाणि प्रतिमुञ्चते कवि: प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे। विनाकमख्यत्सविता वरेण्योऽनु प्रयाणमुषसो विराजति॥' (शु. यजु. १२।३) इस मन्त्र से सम्पुटित उक्त मासपारायण अथवा पक्षपारायण पाठ करना चाहिये। इससे उनकी सब कामनाएँ फलीभूत होती हैं तथा अन्त में उन्हें मोक्ष की प्राप्ति भी होती है।

४. स्वास्थ्य-कामना से—महामृत्युञ्जय मन्त्र से सम्पुटित भागवत पाठ का मासिक या पाक्षिक पारायण करना चाहिये।

५. पुत्र की कामना से—सन्तानगोपाल मन्त्र से सम्पुटित सम्पूर्ण भागवत का मासिक अथवा पाक्षिक पाठ करना चाहिये। अथवा स्थितिक्रम से केवल श्रीमद्भागवत का पाठ करने से पुत्र की प्राप्ति होती है (पाठ मासिक-षाण्मासिक या वार्षिक होना चाहिये।

६. शत्रुनाश के लिये—'ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहातिवेद:। सन: पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुर्दुरिताग्नि:॥' इस श्लोक से सम्पुटित भागवत का पाठ करना चाहिये।

७. कष्टमुक्ति के लिये—'ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणत: क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नम:॥' इस मन्त्र से सम्पुटित मासपारायण करना चाहिये।

८. शत्रुबाधा-विनाश के लिये—'ॐ गोविन्द द्वारिकावासिन् कृष्णदामोदरप्रिय:। कौरवार्णवमग्नानां किं न जानाति केशव॥' इस मन्त्र से सम्पुटित पाठ करना चाहिये।

श्रीमद्भागवत के पृथक्-पृथक् स्कन्धों के अनुष्ठान (पाठ) के फल

१. प्रथम स्कन्ध के पाठ का फल—श्रीमद्भागवत के केवल प्रथम स्कन्ध के पाठ करने से सर्वपाप नष्ट होते हैं तथा गर्भ का स्तम्भन हो जाता है। गर्भस्तम्भन के लिये 'ॐ पाहि पाहि महायोगिन् देवदेव जगत्पते। नान्यं त्वदभयं पक्ष्ये यत्र मृत्यु: परस्परम्॥ १॥ अभिद्रवति मामीश शरस्तप्तायसो विभो। कामं दहतु मान्नाथ मा मे गर्भो निपात्यताम्॥ २॥' इस मन्त्र से सम्पुटित पाठ करना चाहिये। इस पाठ के प्रारम्भ करने के पूर्व कुमारी कन्या के हाथ से कते हुए सूत को लेकर गर्भिणी के पादाङ्गुष्ठ से लेकर केशपर्यन्त लम्बाई की पाँच गुनी लम्बाई का सूत्र लेकर 'ॐ पाहि पाहि०' इस मन्त्र को पढ़कर उसमें नौ गाँठें लगा देनी चाहिये, प्रत्येक गाँठ लगाते समय यह मन्त्र पढ़ना चाहिये। उस सूत्र को गर्भवती स्त्री को अपनी कटि में बाँध लेना चाहिये। इससे गर्भ का स्तम्भन होता है तथा गर्भपात नहीं होता है। इस प्रयोग के उपरान्त पति-पत्नी को नियमित श्रद्धा-विश्वासपूर्वक प्रथम स्कन्ध का पाठ करते रहना चाहिये।

२. द्वितीय स्कन्ध के पाठानुष्ठान का फल—यदि दीपक (घृत का दीपक) जलाकर उसके साक्षी में श्रीमद्भागवत के द्वितीय स्कन्ध का नियमित पाठ किया जाय तो विराट् पुरुष के दर्शन हो जाते हैं तथा अन्त:करण में उसकी अमिट छवि बन जाती है। यह मुक्तिकामियों के लिये होता है।

३. तृतीय स्कन्ध के पाठ का फल—इसके पाठ से शत्रु पराजित होते हैं; निर्वाचन, चयन तथा प्रतियोगिता एवं वाद-विवाद में सफलता मिलती है। युद्ध में विजय प्राप्त होती है।

४. चतुर्थ स्कन्ध के पाठ का फल—चतुर्थ स्कन्ध के पारायण एवं श्रवण से अनुष्ठानकर्ता धनवान हो जाता है, उसका विवाह हो जाता है तथा वंशपरम्परा बनी रहती है।

५. पञ्चम स्कन्ध के पाठ का फल—श्रीमद्भागवत के पञ्चम स्कन्ध का पाठ करने से लोक-परलोक-इतिहास एवं भूगोल के रहस्यों का ज्ञान मिल जाता है। ज्योतिष शास्त्र (खगोल विद्या) में पारङ्गत हो जाता है।

६. षष्ठ स्कन्ध—'दृढा भक्तिर्भगवति रसस्कन्धस्य पाठतः। स्वर्गं यशस्यमायुष्यं धर्मार्थं परिकीर्तयेत्॥' अर्थात् भगवान् में दृढ़भक्ति प्राप्त होती है। यह छठा स्कन्ध स्वर्ग की प्राप्ति कराने वाला, आयु की वृद्धि करने वाला तथा धर्म एवं अर्थ को देने वाला होता है।

७. सप्तम स्कन्ध के पाठ का फल—सप्तम स्कन्ध के पाठ से धर्माचरण एवं चरित्र में दृढ़ता आती है। पाठक नीतिमार्ग पर आरूढ़ होता है, उसका गार्हस्थ्य जीवन सुखमय होता है। पत्नी एवं पुत्र आज्ञाकारी होते हैं। इसे प्रतिदिन परिवार के सदस्यों को पढ़ाना, सुनाना चाहिये।

८. अष्टम स्कन्ध के पारायण का फल—सभी मनोरथों की सिद्धि के लिये प्रतिदिन अष्टम स्कन्ध का पाठ उसके प्रति श्लोक को 'असदविषयमङ्घ्रिभावगम्यं प्रपन्नानमृतवर्यानाशयत् सिन्धुमध्यम्। कपटयुवतिवेषो मोहयन् यः सुरारींस्तमहमुपसृतानां कामपूरं नतोऽस्मि॥' इस मन्त्र से सम्पुटित कर पाठ करना चाहिये।

९. नवम स्कन्ध के पाठ का फल—नवम स्कन्ध के पाठ से वंशवृद्धि होती है। वन्ध्या, काकवन्ध्या तथा जो स्त्री मृतवत्सा होती है, उसे नवम स्कन्ध की कथा भक्तिपूर्वक सुनने से तथा इसका अनुष्ठान ब्राह्मण द्वारा कराने से चिरजीवी पुत्र सन्तति प्राप्त होती है। स्कन्ध के प्रारम्भ तथा समाप्ति पर एक अयुत (१०,००१) की संख्या में 'ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥' इस मन्त्र का जप अवश्य करना चाहिये।

१०. दशम स्कन्ध के पाठ से फल—कृष्णयंन्त्र बनाकर शालिग्राम शिला आदि के समीप दशम स्कन्ध का वृद्धिपाठ करना चाहिये। अन्त में द्वादशाक्षर (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) मन्त्र से हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मणभोजनादि कराना चाहिये। वृद्धिपाठ का अर्थ है—प्रथम दिन एक पाठ, दूसरे दिन दो पाठ, तीसरे दिन तीन पाठ—इस क्रम से पाठ करना चाहिये। 'तमेव परमात्मानं जारबुद्ध्यापि सङ्गताः जुहुर्गुणमयं देहं सद्यः प्रक्षीणबन्धनाः।' इसका सम्पुट लगाने से निकृष्ट प्रारब्ध कर्म नष्ट होता है। 'तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः। पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान् मन्मथमन्मथः॥' इस मन्त्र से सम्पुटित दशम स्कन्ध का पाठ करने से कृष्ण भगवान् के दर्शन होते हैं। और भी प्रयोग हैं; जिन्हें विस्तारभय से नहीं लिखा जा रहा है। इसका पाठ दश दिन करना चाहिये।

११. एकादश स्कन्ध के अनुष्ठान का फल—विष्णुयन्त्र बनाकर प्रतिष्ठित कर एक ग्यारह बत्तियों का दीपक प्रज्वलित करके प्रारम्भ के पूर्व 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का १०८ जप करके पाठ प्रारम्भ करना चाहिये तथा पाठ की समाप्ति पर पुनः एक सौ आठ जप करना चाहिये। इस कार्य को ग्यारह दिनों तक कर चुकने के उपरान्त अन्तिम दिन में उत्तर पूजन करके 'ॐ ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरिञ्चिनुतं शरण्यम्। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥' इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदान करनी चाहिये। फिर अनुष्ठानकर्ता ब्राह्मण को दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट कर यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। इससे साधक ज्ञानवान् होता है।

१२. द्वादश स्कन्ध के अनुष्ठान का फल—इसके पाठारम्भ के पूर्व द्वादशाक्षर अथवा षोडशाक्षर यन्त्र बनाकर बारह बत्तियों का दीपक जलाकर विष्णुमन्त्र की आवरण-पूजा करके फिर एक सौ आठ की संख्या में द्वादशाक्षर मन्त्र का जप करके द्वादश पाठ द्वादश दिन तक करना चाहिये। इस प्रकार बारह दिनों में १२×१२=१४४ (एक सौ चवालीस) पाठ सम्पन्न होते हैं। प्रति पाठ के अन्त में भी एक सौ आठ 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' का जप अवश्य करना चाहिये। समाप्ति के दिन उत्तर पूजन करके पन्द्रह अथवा बारह ब्राह्मणों को भोजन कराने से मनोवाञ्छित कार्य में सफलता मिलती है।

नारायणकवच का पाठ शत्रु की शान्ति के लिये करना चाहिये। **रुद्रगीत** का पाठ शत्रुओं से छुटकारा पाने के लिये नित्यप्रति करणीय है। सन्तान चाहने वाले को **पयोव्रत** का अनुष्ठान करना चाहिये। **गजेन्द्रमोक्ष** का पाठ स्त्रियों को अपने पति-पुत्र-ज्येष्ठ-देवर-ससुर आदि पारिवारिक जनों की कष्टमुक्ति तथा बन्धनमुक्ति के लिये करना चाहिये। पुरुष भी इसका पाठ कर सकते हैं। इससे ऋणग्रस्तता भी समाप्ति हो जाती है। मोक्षकामियों को **पृथुचरित** का पाठ करना चाहिये। **ब्रह्मस्तुति** का पाठ आकर्षण कर्म में करना चाहिये।

भागवतपाठ के साथ तुलसी एवं शालिग्राम की प्रदक्षिणा—यदि श्रीमद्भागवत का पाठ श्री शालिग्राम एवं तुलसी वृक्ष के समीप हो तथा साधक प्रतिश्लोक के पाठ के साथ श्री शालिग्राम जी एवं तुलसी जी की प्रदक्षिणा तथा नमस्कार करे तो उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल जाती है। इससे अनन्त फल प्राप्त होता है।

श्रीमद्भागवत पाठ में क्रमभेद—१. सृष्टिक्रम—प्रथम स्कन्ध के प्रथम श्लोक से लेकर क्रमशः पूरे स्कन्धों का पाठ बारहवें स्कन्ध के अन्तिम श्लोक तक करना सृष्टिक्रम पाठ कहा जाता है। सामान्यतः यही पाठ प्रचलित है।

२. **स्थितिक्रम**—सर्वप्रथम दशम स्कन्ध के प्रथम अध्याय से क्रमशः पाठ करते हुए बारहवें अध्याय के अन्तिम श्लोक का पाठ करके फिर प्रथम स्कन्ध के प्रथम श्लोक का पाठ करते हुए नवम स्कन्ध के अन्त तक पाठ करने को स्थितिक्रम कहा जाता है।

३. **संहारक्रम**—इसमें सर्वप्रथम बारहवें स्कन्ध के अन्तिम श्लोक (तेरहवें श्लोक) से पाठारम्भ करते हैं तथा उत्क्रम से (विलोम = उल्टे) २३वाँ २२वाँ श्लोक पाठ करते हुए पीछे की ओर लौटकर पाठ करते चले जाते हैं और अन्त में प्रथम श्लोक पर समाप्त करते हैं। यह संहारक्रम पाठ कहलाता है।

श्रीमद्भभागवत के अनुष्ठान में अवधिभेद—अनुष्ठान में अवधि एवं आचरण की दृष्टि से चार प्रकार का अनुष्ठान श्रीमद्भभागवत का होता है। १. सात्विक, २. राजस, ३. तामस तथा ४. निर्गुण—ये चार प्रकार हैं। सात दिन विधिपूर्वक सप्ताह कथा का श्रवण एवं अनुष्ठान राजस होता है। इक्कीस दिन में क्रमानुसार भागवतपाठ सात्विक होता है। इसी प्रकार अष्टादशाह भी सात्विक कहा जाता है। पञ्चादशाह की कथा एवं पाठ निर्गुण है। जो पाठ आलसपूर्वक कभी कर लिया, कभी न किया—ऐसी रीति से अनिश्चित अवधि में पूर्ण होता है, वह सालस तथा तामस कहा जाता है।

महाभारतश्रवणविधानम्

महाभारते—

अतः परं प्रवक्ष्यामि यानि देयानि भारते। वाच्यमाने तु विप्रेभ्यो राजन्पर्वणि पर्वणि॥ १॥
स्वस्तिं वाच्य द्विजानादौ ततः कार्ये प्रवर्तिते। समाप्ते पर्वणि ततः स्वशक्त्या पूजयेद्द्विजान्॥ २॥
आदौ तु वाचकं चैव वस्त्रगन्धसमन्वितम्। विधिवद्भोजयेद्राजन्मधुपायसमुत्तमम् ॥ ३॥

ततो मूलफलप्रायं पायसं मधुसर्पिषा। आस्तिकं भोजयेद्राजन्दद्याच्चैव गुडौदनम्॥ ४॥
अपूपैश्चैव पूपैश्च मोदकैश्च समन्वितम्। सभापर्वणि राजेन्द्र हविष्यं भोजयेद्द्विजान्॥ ५॥
आरण्यके मूलफलैस्तर्पयेत्तु द्विजोत्तमान्। अरणीपर्व चासाद्य जलकुम्भान्प्रदापयेत्॥ ६॥
तर्पणानि च मुख्यानि वन्यमूलफलानि च। सर्वकामगुणोपेतं विप्रेभ्योऽन्नं प्रदापयेत्॥ ७॥
विराट्पर्वणि तथा वासांसि विविधानि च। उद्योगे भरतश्रेष्ठ सर्वकामगुणान्वितम्॥ ८॥
भोजनं भोजयेद्विप्रान् गन्धमाल्यैरलङ्कृतान्। भीष्मपर्वणि राजेन्द्र दत्त्वा यानमनुत्तमम्॥ ९॥
ततः सर्वगुणोपेतमन्नं दद्यात्सुसंस्कृतम्। द्रोणपर्वणि विप्रेभ्यो भोजनं परमार्चितम्॥ १०॥
शराश्च देया राजेन्द्र चापान्यसिवरास्तथा। कर्णपर्वण्यपि तथा भोजनं सर्वकामिकम्॥ ११॥
विप्रेभ्यः संस्कृतं सम्यग्दद्यात्संयतमानसः। शल्यपर्वणि राजेन्द्र मोदकैः सगुडौदनैः॥ १२॥
अपूपैस्तर्पणैश्चैव सर्वमन्नं प्रदापयेत्। गदापर्वण्यपि तथा मुद्गमिश्रं प्रदापयेत्॥ १३॥
स्त्रीपर्वणि तथा रत्नैस्तर्पयेत्तु द्विजोत्तमान्। घृतौदनं पुरस्ताच्च ऐषीके दापयेत्पुनः॥ १४॥
ततः सर्वगुणोपेतमन्नं दद्यात्सुसंस्कृतम्।

महाभारत-श्रवण की विधि—अब इसके आगे महाभारत-श्रवण में जो कुछ देना चाहिये, वह वर्णन करता हूँ। हे राजन्! वाचक ब्राह्मणों को प्रत्येक पर्व पर क्या-क्या वस्तुएँ देनी चाहिये, उन सबका वर्णन करता हूँ। ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन करवा कर वाचन प्रारम्भ करवाना चाहिये। प्रत्येक पर्व की समाप्ति पर ब्राह्मणों का पूजन करना चाहिये। आदिपर्व का वाचन होने पर ब्राह्मणों को गन्ध (इत्र) तथा वस्त्र देकर फिर उन्हें विधिवत् हे राजन्! मधु एवं पायस (खीर) का भोजन कराना चाहिये। भोजन में मूल, फल, मधु, पायस, मधु, सर्पि (घी) तथा गुड़-भात का दान आस्तीक (पर्व) की कथा के समय देना चाहिये। हे राजन्! सभापर्व की कथा आरम्भ होने पर ब्राह्मणों को मालपूए, कचौड़ियाँ तथा मिठाइयों के साथ हविष्यान्न भोजन (खीर) खिलाना चाहिये। आरण्यकपर्व के वाचन पर उत्तम ब्राह्मणों को कन्दमूल-फलों से तृप्त करना चाहिये। जब अरणीपर्व की कथा आये तब जल के कुम्भों का दान करना चाहिये। इतना ही नहीं; अपितु जिनको भोजन में ग्रहण करने से तृप्ति का अनुभव हो, ऐसे उत्तम जङ्गली फल एवं कन्द-मूल खिलाना चाहिये। सभी अभीष्ट गुणों से सम्पन्न अन्न ब्राह्मणों को दान करना चाहिये। विराट्पर्व में विविध प्रकार के वस्त्रों का दान करना चाहिये तथा हे भरतश्रेष्ठ! उद्योगपर्व में सर्वकाम-गुणान्वित भोजन ब्राह्मणों को कराना चाहिये एवं उन्हें गन्ध-माल्य भी अर्पित करना चाहिये। हे राजेन्द्र! भीष्मपर्व में उत्तम यान का दान के साथ सर्वगुणोपेत तथा सुसंस्कृत भोजन देना चाहिये। द्रोणपर्व में ब्राह्मणों को परम उत्तम दान के साथ धनुष-बाण तथा उत्तम खड्गदान भी करना चाहिये। कर्णपर्व में ब्राह्मणों को भली-भाँति सिद्ध किया उत्तम भोजन, जो सबकी रुचि के अनुकूल हो, करना चाहिये; साथ ही अपने मन को नियन्त्रण में रखना चाहिये। हे राजेन्द्र! शल्यपर्व में मिठाई, गुड़, भात, पूआ, तृप्तिकारक फल आदि के साथ सब प्रकार के उत्तम अन्नों का दान करना चाहिये। गदापर्व में मूँगमिश्रित चावल खिलाना चाहिये। फिर सुसंस्कारित सर्वगुणसम्पन्न अन्न का दान करना चाहिये। ऐषीकपर्व में घी-भात का भोजन तथा उत्तम अन्न का दान करना चाहिये ॥ १-१४॥

शान्तिपर्वणि च तथा हविष्यं भोजयेद्द्विजान्॥ १५॥
आश्विमेधिकमासाद्य भोजनं सर्वकामिकम्। तथाश्रमनिवासे तु हविष्यं भोजयेद्द्विजान्॥ १६॥
मौसले सार्वगुणितं गन्धमाल्यानुलेपनम्। महाप्रस्थानिके तद्वत्सर्वकामगुणान्वितम्॥ १७॥

स्वर्गपर्वण्यपि तथा हविष्यं भोजयेद्द्विजान्। हरिवंशसमाप्तौ तु सहस्रं भोजयेद्द्विजान्॥ १८॥
गामेकां निष्कसंयुक्तां ब्राह्मणाय निवेदयेत्। तदर्धेनापि दातव्या दरिद्रेणापि पार्थिव॥ १९॥
प्रतिपर्वसमाप्तौ तु पुस्तकं वै विचक्षणः। सुवर्णेन च संयुक्तं वाचकाय निवेदयेत्॥ २०॥
हरिवंशे पर्वणि च पायसं तत्र भोजयेत्। पारणे पारणे राजन्यथावद्भरतर्षभ॥ २१॥
समाप्य सर्वाः प्रयतः संहिताः शास्त्रकोविदः। शुभे देशे निवेश्याथ क्षौमवस्त्राभिसंवृताः॥ २२॥
अर्चयेत यथान्यायं गन्धमाल्यैः पृथक्पृथक्। हिरण्यं च सुवर्णं च दक्षिणामथ दापयेत्॥ २३॥

शान्तिपर्व में ब्राह्मणों को हविष्य भोजन कराना चाहिये तथा आश्वमेधिक पर्व में सबकी रुचि के अनुकूल उत्तम भोजन देना चाहिये। आश्रमवासिक पर्व में ब्राह्मणों को हविष्यान्न खिलाना चाहिये तथा मौसल पर्व में सर्वगुणसम्पन्न अन्न, चन्दन, भात, माला तथा अनुलेपन का दान करना चाहिये। महाप्रास्थानिक पर्व में भी सभी आवश्यक गुणों से युक्त अन्न आदि का दान करना चाहिये। स्वर्गारोहण पर्व में भी ब्राह्मणों को हविष्यान्न खिलाना चाहिये। हरिवंश की समाप्ति होने पर एक सहस्र ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये तथा स्वर्णमुद्रायुक्त एक गौ का दान भी करना चाहिये। भले ही उससे आधा दे, परन्तु दरिद्र श्रोता को भी इन दानों को अवश्य देना चाहिये। प्रत्येक पर्व की समाप्ति पर सुवर्णसहित उस पर्व की पुस्तक का दान अवश्य करना चाहिये। हरिवंश पर्व में वहाँ पायस का भोजन करायें; प्रत्येक पारण के समय ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। इस प्रकार एकाग्रचित्त होकर सब पर्वों की संहिताओं को समाप्त करके शास्त्रवेत्ता पुरुष को चाहिये कि वह उन्हें (पुस्तकों को) रेशमी वस्त्र में लपेटकर किसी उत्तम स्थान में रखे तथा स्वयं स्नानादि से पवित्र होकर स्वच्छ वस्त्र, पुष्पमाला तथा आभूषण धारण करके चन्दन माला आदि उपचारों से उन संहितापुस्तकों की पृथक्–पृथक् पूजा चित्त को शुद्ध एवं एकाग्र करके करे। भाँति–भाँति के उत्तम भक्ष्य, भोजन, पेय, माल्य, तथा अन्य कमनीय वस्तुएँ भेंट करना चाहिये॥ १५–२३॥

सर्वथा तोषयेद्भक्त्या वाचकं गुरुमात्मनः। वाचके परितुष्टे तु शुभा प्रीतिरनुत्तमा॥ २४॥
ब्राह्मणेषु तु तुष्टेषु प्रसन्नाः सर्वदेवताः। अष्टादशपुराणानां श्रवणाद्यत्फलं भवेत्॥ २५॥
तत्फलं समवाप्नोति वैष्णवो नात्र संशयः। स्त्रियश्च पुरुषाश्चैव वैष्णवं पदमाप्नुयुः॥ २६॥
स्त्रिभिश्च पुत्रकामाभिः श्रोतव्यं वैष्णवं यशः। दक्षिणा चात्र देया वै निष्कपञ्चसुवर्णकम्॥ २७॥
वाचकाय यथाशक्त्या यथोक्तं फलमिच्छता। स्वर्णशृङ्गीं च कपिलां सवत्सां वस्त्रसंवृताम्॥ २८॥
वाचकाय च दद्याद्धि आत्मनः श्रेय इच्छता। अलङ्कारं प्रदद्याच्च पाण्योर्वै भरतर्षभ॥ २९॥
कर्णस्याभरणं दद्याद्धनं चैव विशेषतः। भूमिदानं समादद्याद्वाचकाय नराधिप॥ ३०॥
शृणोति श्रावयेद्वापि सततं चैव यो नरः। सर्वपापविनिर्मुक्तो वैष्णवं पदमाप्नुयात्॥ ३१॥
पितॄनुद्धरते सर्वानेकादशसमुद्भवान्। आत्मानं ससुतं चैव स्त्रियं च भरतर्षभ॥ ३२॥
दशांशश्चैव होमोऽपि कर्त्तव्योऽत्र नराधिप। इदं मया तवाग्रे च प्रोक्तं सर्वं नरर्षभ॥ ३३॥

इति महाभारतश्रवणविधानं समाप्तम्।

सब प्रकार भक्तिभाव से अपने वाचक गुरु को सन्तुष्ट करना चाहिये। वाचक के सन्तुष्ट एवं प्रसन्न हो जाने पर, तथैव ब्राह्मणों के भी सन्तुष्ट एवं प्रसन्न हो जाने पर सभी देवता प्रसन्न हो जाते हैं। अठारह पुराणों के श्रवण से जो फल प्राप्त होता है, उस फल को केवल महाभारत के श्रवण से ही वैष्णव प्राप्त कर लेता है, स्त्री एवं पुरुषों को वैष्णव पद (लोक) की प्राप्ति होती है। पुत्रकामना वाली स्त्रियों को इस वैष्णवों के यश को अवश्य सुनना चाहिये। यहाँ पर पाँच सुवर्णनिष्क दक्षिणा देनी चाहिये। वाचक को यथाशक्ति सोने से सींग मढ़वा कर कपिला

गाय बछड़ा सहित दानफल की इच्छा वाले को वस्त्राच्छादित करके देनी चाहिये। यदि स्वयं का श्रेय चाहता तो वाचक को हाथों के लिये आभूषण भी देना चाहिये। कर्णाभूषण, धनदान, भूमिदान इत्यादि वाचक को देना चाहिये। जो व्यक्ति सतत् रूप से इस महाभारत को सुनता-सुनाता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर वैष्णव पद को प्राप्त हो जाता है। वह अपने ग्यारह पीढ़ियों के पुरखों का उद्धार कर देता है। वह स्वयं अपनी पत्नी एवं पुत्रों का भी उद्धार कर देता है। दशांश का होम भी करना चाहिये। हे राजन्! यह मैंने आपको सब बता दिया॥ २४-३३॥

वाल्मिकीरामायणनवाहपाठविधानम्

अथ श्रीवाल्मीकिमुनिकृतस्यादिकाव्यस्य श्रीमद्रामायणाख्यस्य नवाहपाठविधानं रामसेवाग्रन्थे—

माघ्नकार्तिकवैशाखे चैत्रे वान्यतमेऽपि च। यथावकाशः श्रद्धा च तथैव शृणुयान्नरः॥

वाल्मीकि रामायण नवाहपाठ-विधान—रामसेवाग्रन्थ में कहा है कि माघ, कार्तिक, चैत्र में विशेषकर तथा सामान्यतः अन्य मास में भी जब अवकाश हो तब वाल्मीकि रामायण का श्रवण करना चाहिये।

श्रीरामायणमाहात्म्येऽपि—

चैत्रे माघ्ने कार्तिके च सिते पक्षे च वाचयेत्। नवाह्ने सुमहापुण्यं श्रोतव्यं च प्रयत्नतः॥
पञ्चम्या दिनमारभ्य रामायणकथामृतम्। नवाहश्रवणेनैव सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

श्री रामायण माहात्म्य में भी कहा है—चैत्र, माघ तथा कार्तिक के शुक्लपक्ष में वाचन करे। नौ दिनों तक इसको प्रयत्नपूर्वक सुनना चाहिये। पञ्चमी तिथि को श्री रामायण के कथामृत का आरम्भ करना चाहिये। इसे निरन्तर नौ दिनों तक सुनने से सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

रामसेवायाम्—

तिथिः सैव महापुण्या स कालः सर्वपुण्यदः। यस्मिन्रामायणकथाश्रवणे जायते मतिः॥
पुण्यक्षेत्रे पुण्यतीर्थे तुलसीविष्णुसन्निधौ। स्वगृहे वा पठेद्यस्तु स देवैः परिपूज्यते॥
पूर्वोत्तरमुखो वक्ता श्रोतारस्तत्पुरःस्थिताः। एकाग्रतरचित्तेन पठेद्वा शृणुयान्नरः॥
व्यासासनं समास्तीर्य तदग्रे पुस्तकासनम्। वितानपल्लवोपेतं कदलीस्तम्भमण्डितम्॥
श्रोतृणामासनं स्थाप्यं विशालं तत्पुरः पुनः। श्रोतृभिश्च तथा वक्तुर्व्यासादग्रन्थस्य चोच्चता॥
पुराणं पूजयेन्नित्यं नित्यं व्यासस्य पूजनम्। मध्याह्ने घ्नटिकायुग्मं विश्रामं कारयेत्तथा॥
कथान्ते भगवन्नामस्मरणं सम्प्रकीर्तितम्। समाप्तौ वस्त्रभूषाद्यैर्द्रव्यैर्व्यासस्य तोषणम्॥

रामसेवा ग्रन्थ में कहा है कि वही तिथि महापुण्यशाली है तथा वही समय पुण्यप्रद है, जिसमें रामायण की कथा सुनने में मन लगे। पुण्यक्षेत्र, पुण्यतिथि में तुलसी एवं विष्णु के सान्निध्य में अथवा आपने घर में जो इसका पाठ करता है, वह देवों द्वारा पूजा जाता है। पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके वक्ता श्रोता को आमने-सामने बैठना चाहिये एवं एकाग्रचित्त से इसका पठन तथा श्रवण करना चाहिये। सर्वप्रथम व्यास के लिये आसन लगाये, फिर उसके आगे पुस्तक के लिये आसन की व्यवस्था करे। वितान तथा पल्लव से युक्त केले का मण्डप बनाये। श्रोताओं के लिये भी विशाल आसन वक्ता के आसन के आगे बिछाना चाहिये। श्रोताओं के आसन से वक्ता का आसन ऊँचा बनाना चाहिये। नित्यप्रति पुराण की पूजा तथा व्यास की भी नित्य पूजा करनी चाहिये। मध्याह्न में दो घटी का विश्राम कथा के लिये देना चाहिये। कथा की समाप्ति पर भगवन्नाम का कीर्तन तथा उच्चारण करना चाहिये। कथा के अन्तिम दिन व्यास को वस्त्र-आभूषण तथा अन्य द्रव्यों से सन्तुष्ट करना चाहिये।

अथ नवदिनपर्यन्तं कथाविश्रामस्थलकथनम्—

प्रथमे तु अयोध्यायाः षट्सर्गान्ते शुभा स्थितिः। तस्यैवाऽशीतिसर्गान्ते द्वितीये दिवसे स्थितिः॥ १॥
तथा विंशतिसर्गान्ते चारण्यस्य तृतीयके। दिने चतुर्थे षट्चत्वारिंशत्सर्गे कथास्थितिः॥ २॥
किष्किन्धाख्यस्य काण्डस्य पाठविद्भिरुदाहृता। सुसप्तचत्वारिंशत्के सर्गान्ते सुन्दरे स्थितिः॥ ३॥
पञ्चमे दिवसे कुर्य्यादथ षष्ठे तथोच्यते। युद्धकाण्डस्य पञ्चाशत्सर्गान्ते विमला स्थितिः॥ ४॥
एकोनशतसङ्ख्याके सर्गान्ते सप्तमे दिने। युद्धस्यैव तु काण्डस्य विश्रामः सम्प्रकीर्तितः॥ ५॥
तथा चोत्तरकाण्डस्य षट्त्रिंशत्सर्गपूरणे। अष्टमे दिवसे कृत्वा स्थितिश्च नवमे दिने॥ ६॥
शेषं समाप्य युद्धस्य चान्त्यं सर्गं पुनः पठेत्। रामराज्यकथा यस्मिन्सर्ववाञ्छितदायिनी॥ ७॥

वैदिक की कथा के विश्रामस्थल—प्रथम दिवस पूरा बालकाण्ड तथा अयोध्याकाण्ड के छः सर्गों तक कथा कहनी चाहिये। यह स्थिति शुभ होती है। फिर उसी अयोध्याकाण्ड के अस्सीवें सर्ग की समाप्ति पर द्वितीय दिन का विश्राम शुभ होता है। अरण्यकाण्ड के बीस सर्ग-पर्यन्त तीसरे दिन कथा कहनी चाहिये। चौथे दिन उसी के ४६वें सर्ग पर विश्राम देना चाहिये। फिर उसके आगे किष्किन्धाकाण्ड की पूरी समाप्ति ४७वें सर्ग पर पाँचवाँ विश्राम करना चाहिये। फिर युद्धकाण्ड के ५०वें सर्ग की समाप्ति पर निन्यानबे सर्ग पर सातवाँ विश्राम करना चाहिये। उत्तरकाण्ड के ३६वें सर्ग की समाप्ति पर आठवाँ विश्राम शुभ होता है। फिर नवें दिन कथा को समाप्त करके युद्ध काण्ड के अन्तिम सर्ग का पाठ पुनः करना चाहिये। राम की कथा सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाली होती है॥ १-७॥

एवं पाठक्रमः पूर्वैराचार्यैश्च विनिर्मितः। यः करोति नरश्रेष्ठः शृणुयाद्वा समाहितः॥ ८॥
धर्म्मार्थकाममोक्षाणां फलं त्वविकलं लभेत्। कथान्ते मण्डपं कृत्वा सर्वतोभद्रसंयुतम्॥ ९॥
सस्थण्डिलं सकुण्डं वा पताकाकदलीयुतम्। पूजयेद्गणराजं च ब्राह्मणैः स्वस्ति वाचयेत्॥ १०॥
मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं भूसुरवर्णनम्। मण्डले सर्वतोभद्रे हैमं रामं प्रपूजयेत्॥ ११॥
जानकीसहितं वस्त्रभूषास्रक्चन्दनादिभिः। पार्श्वे भरतशत्रुघ्नौ हनुमन्तं पुरःस्थितम्॥ १२॥
पृष्ठे विभीषणं भक्तं सुग्रीवं तु समर्चयेत्। लक्ष्मणं पादपीठस्य सन्निधौ विधिनार्चयेत्॥ १३॥

इस प्रकार से पूर्व के आचार्यों ने पाठ का क्रम निर्धारित किया है। जो नरश्रेष्ठ इस विधि से पाठ करता है, उसे धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चारो पदार्थों का फल मिलता है। कथा की समाप्ति करके मण्डप का निर्माण करना चाहिये तथा उनमें सर्वतोभद्रमण्डल का निर्माण कर मण्डप में स्थण्डिल कुण्ड आदि बनाकर उसे ध्वज-पताका एवं तोरणों से सजाना चाहिये। श्रीगणेश जी का पूजन करके स्वस्तिवाचन, मातृकापूजन, नान्दीश्राद्ध, ब्राह्मणवरण करके सर्वतोभद्र पर श्री रामजी की सुवर्णप्रतिमा की जानकीसहित वस्त्राभूषण, माला, चन्दन आदि से पूजा करके पार्श्व में भरत-शत्रुघ्न तथा सामने स्थित हनुमान की भी पूजा करनी चाहिये। पीठ पर विभीषण तथा सुग्रीव की अर्चना करनी चाहिये तथा लक्ष्मण जी का पादपीठ के समीप पूजन करना चाहिये॥ ८-१३॥

चतुःशतोत्तरं चैव द्विसहस्त्रं तिलैस्तदा। हवनं मन्त्रतः कुर्याद्द्वादशाक्षरविद्यया॥ १४॥
अष्टाक्षरेण वा रामषडक्षरत आचरेत्। तर्पणं तद्दशांशेन मार्ज्जनं तद्दशांशतः॥ १५॥
ब्राह्मणान्वैष्णवांश्चैव सदन्नेन तु भोजयेत्। एकपारायणस्यैषा सङ्ख्या होमे प्रकीर्तिता॥ १६॥
पाठवृद्ध्या तु होमस्य सङ्ख्यावृद्धिः प्रजायते। गोप्रदानादिकं सर्वं दानं शक्त्या प्रदापयेत्॥ १७॥
व्यासाय पुस्तकं दद्याद्धेमसिंहासने स्थितम्। साङ्गतासिद्धये तस्य स्वर्णमुद्रां समर्पयेत्॥ १८॥

भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा दीनानाथान् समर्चयेत्। एवं कृते मनुष्याणां दुर्लभोऽपि मनोरथः॥ १९॥
श्रीरामस्य प्रसादेन सुलभः स्यान्न संशयः। प्रतिमां कलशोपेतां मण्डलेन समन्विताम्॥ २०॥
विसर्जयित्वाऽऽचार्याय दद्यात्कर्म्माङ्गसिद्धये। कृतकृत्यं भावयित्वा चात्मानं तु हरिं स्मरेत्॥ २१॥

इति श्रीवाल्मीकिरामायणनवाहपारायणविधानम्।

द्वादशाक्षर मन्त्र से तिलादि के द्वारा चौबीस सौ आहुतियों का हवन करना चाहिये। अथवा अष्टाक्षर मन्त्र या श्री रामषडक्षर मन्त्र से होम करके उसका दशांश तर्पण तथा उसका दशांश मार्जन करना चाहिये। श्रेष्ठ अन्न से ब्राह्मणों तथा वैष्णवों को भोजन कराना चाहिये। यह संख्या एक पारायण की है। पाठवृद्धि होने पर होम की संख्या में भी वृद्धि होती है। यथाशक्ति गोदानादि भी करना चाहिये। व्यास को स्वर्णसिंहासन पर रखकर पुस्तक दान करना चाहिये। उसकी साङ्गता के लिये स्वर्णमुद्राओं का दान भी करना चाहिये। भूयसी दक्षिणा देकर दीनों, अनाथों को तृप्त करना चाहिये। ऐसा करने से मनुष्यों के दुर्लभ मनोरथ पूरे होते हैं। उसे श्री रामजी की कृपा से सब कुछ मिल जाता है; इसमें सन्देह नहीं है। स्वर्णप्रतिमा तथा कलश एवं सर्वतोभद्रमण्डल की सम्पूर्ण सामग्री का विसर्जन करके उसे आचार्य को कर्माङ्ग की सिद्धि के लिये दे देना चाहिये। तदनन्तर अपने को कृतकृत्य मानकर श्रीहरि का स्मरण करना चाहिये॥ १४-२१॥

श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण के नवाह कथाविश्राम स्थलों का प्रदर्शक चक्र
(अनुष्ठानप्रकाश के अनुसार)

नवाह दिवस क्रम	काण्ड का नाम	सर्ग संख्या	पाठ प्रारम्भ	काण्ड	सर्ग संख्या	दैनिक पाठ की समाप्ति	दैनिक पाठ में सर्गों की संख्या	विशेष=सप्तकाण्डात्मक पाठ
१. प्रथम दिवस	बालकाण्ड	१	से	अयोध्याकाण्ड	६	तक	७७ + ६ = ८३ सर्ग	इस पारायण में उत्तरकाण्ड-सहित सात काण्डों का पाठ होता है, जिसमें ७०+११९+७५+६७+६८+१२८+१११=६४५ (छः सौ पैंतालीस) कुल सर्गों का पाठ नौ दिनों में सम्पन्न होता है।
२. द्वितीय दिवस	अयोध्याकाण्ड	७	से	अयोध्याकाण्ड	८०	तक	= ७४ सर्ग	
३. तृतीय दिवस	अयोध्याकाण्ड	८१	से	अरण्यकाण्ड	२०	तक	३९ + २० = ५९ सर्ग	
४. चतुर्थ दिवस	अरण्यकाण्ड	२१	से	किष्किन्धाकाण्ड	४६	तक	५५ + ४६ = १०१ सर्ग	
५. पञ्चम दिवस	किष्किन्धाकाण्ड	४७	से	सुन्दरकाण्ड	४७	तक	२१ + ४७ = ६८ सर्ग	
६. षष्ठ दिवस	सुन्दरकाण्ड	४८	से	युद्धकाण्ड	५०	तक	२१ + ५० = ७१ सर्ग	
७. सप्तम दिवस	युद्धकाण्ड	५१	से	युद्धकाण्ड	९९	तक	= ४८ सर्ग	
८. अष्टम दिवस	युद्धकाण्ड	१००	से	उत्तरकाण्ड	३६	तक	२९ + ३६ = ६५ सर्ग	
९. नवम दिवस	उत्तरकाण्ड	३७	से	उत्तरकाण्ड	१११ (समाप्ति)	तक	= ७५ सर्ग	

मतान्तर से श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण के नवाह पाठ (कथा) विश्राम स्थलों का प्रदर्शक चक्र

नवाह दिवस क्रम	काण्ड का नाम	सर्ग संख्या	पाठ प्रारम्भ	काण्ड	सर्ग संख्या	दैनिक पाठ की समाप्ति	दैनिक पाठ में सर्गों की संख्या	विशेष=सप्तकाण्डात्मक पाठ
१. प्रथम दिवस	बालकाण्ड	१	से	बालकाण्ड	७७	तक	सम्पूर्ण काण्ड ७७ सर्ग	इस मत से उत्तरकाण्ड का पाठ नहीं किया जाता है; केवल आदिकाण्ड, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर तथा युद्ध (लङ्का) काण्ड—इन छः कांडों का ही पाठ होता है, जिनकी सर्ग संख्या क्रमशः ७७+११९+७५+६७+६८+१२८=५३४ (पाँच सौ चौंतीस) होती है।
२. द्वितीय दिवस	अयोध्याकाण्ड	१	से	अयोध्याकाण्ड	६०	तक	६० सर्ग	
३. तृतीय दिवस	अयोध्याकाण्ड	६१	से	अयोध्याकाण्ड	११९	तक	५९ सर्ग	
४. चतुर्थ दिवस	अरण्यकाण्ड	१	से	अरण्यकाण्ड	६८	तक	६८ सर्ग	
५. पञ्चम दिवस	अरण्यकाण्ड	६९	से	किष्किन्धाकाण्ड	४९	तक	७ + ४९ = ५६ सर्ग	
६. षष्ठ दिवस	किष्किन्धाकाण्ड	५०	से	सुन्दरकाण्ड	५६	तक	१८ + ५६ = ७४ सर्ग	
७. सप्तम दिवस	सुन्दरकाण्ड	५७	से	युद्धकाण्ड	५०	तक	१२ + ५० = ६२ सर्ग	
८. अष्टम दिवस	सुन्दरकाण्ड	५१	से	युद्धकाण्ड	१११	तक	६१ सर्ग	
९. नवम दिवस	युद्धकाण्ड	११२	से	युद्धकाण्ड	१२८	तक	१७ सर्ग	

विमर्श—विद्वानों के अनुसार प्रतिदिन कथा-समापन काल में निम्नाङ्कित १२ श्लोकों का पाठ कर मङ्गलाशासन करके ही कथा समाप्त करनी चाहिये—

मङ्गलाशासनम्

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यो शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥ १॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी। देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः॥ २॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः। अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥ ३॥
चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्। एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥ ४॥
शृण्वन् रामायणं भक्त्या यः पादं पदमेव वा। स याति ब्रह्मणः स्थानं ब्रह्मणा पूज्यते सदा॥ ५॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥ ६॥
यन्मङ्गलं सहस्राक्षे सर्वदेवनमस्कृते। वृत्रनाशे समभवत् तत्ते भवतु मङ्गलम्॥ ७॥
यन्मङ्गलं सुपर्णस्य विनता कल्पयत् पुरा। अमृतं प्रार्थयानस्य तत्ते भवतु मङ्गलम्॥ ८॥
मङ्गलं कौसलेन्द्राय महनीयगुणात्मने। चक्रवर्त्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम्॥ ९॥
अमृतोत्पादने दैत्यान् घ्नतो वज्रधरस्य यत्। अदितिर्मङ्गलं प्रादात् तत्ते भवतु मङ्गलम्॥ १०॥
त्रीन् विक्रमान् प्रक्रमतो विष्णोरमिततेजसः। यदासीन्मङ्गलं राम तत्ते भवतु मङ्गलम्॥ ११॥
ऋषयः सागराः द्वीपा वेदा लोकादिशश्च ते। मङ्गलानि महाबाहो दिशन्तु तव सर्वदा॥ १२॥

मङ्गलपाठ करने के उपरान्त नारायण भगवान् को सम्पूर्ण कर्म का अर्पण करने के लिये निम्नलिखित श्लोक भी समाहित चित्त से उच्चारित करना चाहिये—

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात्।
करोमि यद् यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥ १॥

॥ सर्वं नारायणार्पणमस्तु॥

अथ वाल्मीकिरामायणपुस्तकदानविधानम्—तत्रादौ पञ्चोपचारैः पुस्तकपूजनम्॥

ॐ सदा श्रवणमात्रेण पापिनां सद्गतिप्रदे। शुभे रामकथे तुभ्यं गन्धमद्य समर्प्ये॥ १॥
इति गन्धम्।

बालादिसप्तकाण्डेन सर्वलोकसुखप्रद। रामायण महोदार पुष्पं तेऽद्य समर्प्ये॥ २॥
इति पुष्पाणि पुष्पमालां च।

यस्यैकश्लोकपाठस्य फलं सर्वफलाधिकम्। तस्मै रामायणायाद्य दशाङ्गं धूपमर्प्ये॥ ३॥
इति धूपम्।

यस्य लोके प्रणेतारो वाल्मीक्यादिमहर्षयः। तस्मै रामचरित्राय घृतदीपं समर्प्ये॥ ४॥
इति दीपम्।

श्रूयते ब्रह्मणो लोके शतकोटिप्रविस्तरम्। रूपं रामायणस्यास्य तस्मै नैवेद्यमर्प्ये॥ ५॥
इति नैवेद्यम्।

एवं पञ्चोपचारपूजां कर्पूरेण नीराजनं च कृत्वा प्रदक्षिणाचतुष्टयं पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा साष्टाङ्गं प्रणम्य प्रार्थनां कुर्यात्—

वाल्मीकिगिरिसम्भूता रामसागरगामिनी। पुनाति भुवनं पुण्या रामयणमहानदी॥ १॥
श्लोकसारसमाकीर्णं सर्गकल्लोलसङ्कुलम्। काण्डग्राहमहामीनं वन्दे रामायणार्णवम्॥ २॥
अस्मिन्कलिमलाकीर्णे काले सर्वशुभप्रदम्। मनुजानां गतिर्नास्ति श्रीमद्रामकथां विना॥ ३॥
वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः। शृण्वन्नाम कथानादं को न याति परां गतिम्॥ ४॥

इति सम्प्रार्थ्य देवब्राह्मणं सम्पूज्य पुस्तकस्य सङ्कल्पं कृत्वा ब्राह्मणाय दद्यात्। ततो दानप्रतिष्ठासिद्ध्ये सुवर्णदक्षिणां दत्त्वा प्रणिपत्य विसर्जयेत्। इति पुस्तकदानम्।

वाल्मीकि रामायण की पुस्तकदान की विधि—सर्वप्रथम पञ्चोपचारों से वाल्मीकीय रामायण की पूजा करनी चाहिये। इसके लिये मूल में लिखित—'ॐ सदा श्रवणमात्रेण पापिनां सद्गतिप्रदे। शुभे रामकथे तुभ्यं गन्धमद्य समर्पये॥' इस मन्त्र से गन्ध समर्पित कर 'बालादिसप्तकाण्डेन सर्वलोकसुखप्रद। रामायण महोदार पुष्पं तेऽद्य समर्पये।' इस मन्त्र से पुष्प एवं पुष्पमाला समर्पित करनी चाहिये। फिर 'यस्य लोके प्रणेतारो वाल्मीक्यादिमहर्षयः। तस्मै राम चरित्राय घृतदीपं समर्पये।' इस श्लोक से दीपदान करना चाहिये। इसी प्रकार मूल में लिखित मन्त्रों से नैवेद्य-पर्यन्त पञ्चोपचार पूजन करना चाहिये। इस प्रकार पञ्चोपचार पूजन कर रामायण से प्रार्थना करनी चाहिये। प्रार्थना में मूल में लिखित 'वाल्मीकिगिरिसम्भूता रामसागरगामिनी। पुनाति भुवनं पुण्या रामायणमहानदी॥' इत्यादि चार श्लोकों वाली 'रामायणरूपी महानदी लोकपावनी है। यह श्लोक के सार एवं सर्गरूपी कल्लोलों से युक्त है, जिसमें काण्ड ग्राह तथा महामत्स्य हैं'—ऐसे रामायणरूपी समुद्र की वन्दना करता हूँ। इस कलिकाल में कलिमल से लिप्त समय में शुभ फल देने वाली रामकथा को छोड़कर मनुष्यों की सद्गति देने वाली अन्य कोई दूसरी कथा नहीं है। जिस कवितावन में वाल्मीकि ऋषिरूपी सिंह गर्जना कर रहा है, उस कथानाद को सुनकर कौन ऐसा है, जिसे परमगति प्राप्त नहीं होती है।' ऐसी प्रार्थना कर देवताओं तथा ब्राह्मणों का पूजन करके पुस्तकदान का सङ्कल्प करके ब्राह्मण को देना चाहिये। तदनन्तर दान की प्रतिष्ठा की सिद्धि के लिये प्रणाम करके फिर विसर्जन कर देना चाहिये।

तत्तत्काण्डपाठफलम्

अथ काण्डपाठफलकथनम्—पुत्रकामो बालकाण्डं पठेत्। लक्ष्मीकामोऽयोध्याकाण्डम्। नष्टराज्यप्राप्तिकामः किष्किन्धाकाण्डम्। शत्रुनाशकामः सर्वकामश्च लङ्काकाण्डं च पठेत्। उक्तञ्च बृहद्धर्मपुराणे—

अनावृष्टिर्महापीडा ग्रहपीडाप्रपीडिताः। आदिकाण्डं पठेयुर्ये ते मुच्यन्ते ततो भयात्॥ १॥
पुत्रजन्मविवाहादौ गुरुदर्शन एव च। पठेच्च शृणुयाच्चैव द्वितीयं काण्डमुत्तमम्॥ २॥
वने राजकुल वह्निजलपीडायुतो नरः। पठेदारण्यकं काण्डं शृणुयाद्वा स मङ्गली॥ ३॥
मित्रलाभे तथा नष्टद्रव्यस्य गवेषणे। श्रुत्वा पठित्वा कैष्कन्ध्यं काण्डं तत्तत् फलं लभेत्॥ ४॥
श्राद्धेषु देवकार्येषु पठेत् सुन्दरकाण्डकम्॥ ५॥
शत्रोर्जये समुत्साहे जनवादे विगर्हिते। लङ्काकाण्डं पठेत् किंवा शृणुयात् स सुखी भवेत्॥ ६॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि काण्डमभ्युदयोत्तरम्। आनन्दकार्ये यात्रायां स जयी परतोऽत्र च॥ ७॥
मोक्षार्थी लभते मोक्षं भक्त्यर्थी भक्तिमेव च। ज्ञानार्थी लभते ज्ञानं ब्रह्मतत्त्वोपलम्भकम्॥ ८॥

इति वाल्मीकिरामायणस्य पृथक्-पृथक् काण्डपाठप्रयोजनम्।

वाल्मीकि रामायण के अलग-अलग काण्डों के पाठ से कामनासिद्धि का कथन—पुत्र की इच्छा वाले को बालकाण्ड का पाठ करना चाहिये। लक्ष्मी चाहने वाले को अयोध्याकाण्ड पढ़ना चाहिये। जिसे अपनी खोई हुई राज्यसत्ता (पद) आदि को प्राप्त करना हो, उसे किष्किन्धाकाण्ड का पाठ करना चाहिये। सर्वकामनाओं की पूर्ति के लिये सुन्दरकाण्ड का पाठ विहित है। शत्रुनाश की कामना से तथा सर्वकामना से लङ्काकाण्ड (युद्धकाण्ड) पढ़ना चाहिये। बृहद्धर्मपुराण में इस प्रकार की फलश्रुति अलग-अलग काण्डों के पाठ की दी गयी है—

१. आदिकाण्ड (बालकाण्ड) का पाठ—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, महापीड़ा, ग्रहपीड़ा आदि का भय होने पर बालकाण्ड का पाठ करने पर सभी महाभयों से मुक्ति मिलती है।

२. अयोध्याकाण्ड का पाठ—जो द्वितीय काण्ड को पढ़ता तथा सुनता है, उसे पुत्रजन्म, विवाहोत्सव तथा गुरुदेव-दर्शन के समय शुभ फल प्राप्त होता है।

३. अरण्यकाण्ड (वनकाण्ड)—वन में दुःखी होने पर, राजकुल से पीड़ा होने पर, अग्निपीड़ा अथवा जलपीड़ा होने पर अरण्यकाण्ड के पाठ से इन पीड़ाओं से छुटकारा मिलता है तथा उसका कल्याण होता है।

४. किष्किन्धाकाण्ड—मित्रलाभ के लिये, मुकदमे में सन्धि के लिये, नष्टद्रव्य (चोरी गई या खोई वस्तु) की प्राप्ति के लिये किष्किन्धाकाण्ड के पाठ को करना तथा सुनना चाहिये।

५. सुन्दरकाण्ड का पाठ—श्राद्धकार्यों में तथा देवकार्यों में सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं श्रवण करना चाहिये।

६. लङ्काकाण्ड का पाठ—शत्रु को जीतने के लिये, विजय के उपरान्त, कलङ्क लगने पर, बदनामी होने पर लङ्काकाण्ड (युद्धकाण्ड) का पाठानुष्ठान तथा श्रवण करने से सुख मिलता है।

७. उत्तरकाण्ड का पाठ—जो आनन्दकार्य में अथवा यात्रा में सुन्दरकाण्ड का पाठ करता है, वह सर्वत्र विजय को प्राप्त करता है। मोक्षार्थी को मोक्ष मिलता है तथा भक्ति चाहने वाले को भक्ति मिलती है। ज्ञानार्थी को ज्ञान मिलता है तथा ब्रह्मसाक्षात्कार होता है।

नवाह्नपाठे श्रीमद्वाल्मीकिरामायणन्यासादिविधानम्

तत्र प्रयोगः—ॐ अस्य श्रीवाल्मीकिरामायणमहामन्त्रस्य वाल्मीकिभगवान् ऋषिः। प्रायेण अनुष्टुप् छन्दः। श्रीरामः परमात्मा देवता। अभयं सर्वभूतेभ्य इति बीजम्। अङ्गुल्यग्रेण तान् हन्यामिति शक्तिः। एतदस्त्रबलं दिव्यमिति कीलकम्। भगवान्नारायणो देव इति तत्त्वम्। धर्मात्मा सत्यसङ्गश्चेत्यस्त्रं पाठे विनियोगः। ॐ श्रीं रां आपदामपहर्तारमित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ १॥ ॐ ह्रीं रीं दातारं तर्जनीभ्यां नमः॥ २॥ ॐ रों रूं सर्वसम्पदामिति मध्यमाभ्यां नमः॥ ३॥ ॐ श्रीं रैं लोकाभिराममित्यनामिकाभ्यां नमः॥ ४॥ ॐ श्रीं रौं श्रीराममिति कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ५॥ ॐ रौं रः भूयोभूयो नमाम्यहमिति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ६॥ इति करन्यासः। एवमेव हृदयादिपञ्चाङ्गन्यासं कृत्वा ॐ अहं सखा ते काकुत्स्थ इत्यस्त्राय फट्॥ ६॥ इति षडङ्ग कृत्वा ॐ ब्रह्मा स्वयंभूर्भगवानिति दिग्बन्धं कुर्य्यात्। अथ ध्यानम्—

वामे भूमिसुता पुरस्तु हनुमान्पश्चात्सुमित्रासुतः शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च।
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य पठेत्।

ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयोभूयो नमाम्यहम्॥

इति मन्त्रेण सम्पुटितरामायणपाठात्सकलकार्य्यसिद्धिः। इति वाल्मीकिरामायणपाठे सामान्यन्यासादिविधानम्।

वाल्मीकि रामायण पाठ के लिये न्यासादि के प्रयोग—मूल में लिखित 'ॐ अस्य श्रीवाल्मीकिरामायण-महामन्त्रस्य०' इत्यादि के द्वारा विनियोगार्थ जल छोड़ना चाहिये। फिर मूल में लिखित 'ॐ श्रीं रां आपदामपहर्त्तारम् इति अङ्गुष्ठाभ्याम् नमः' इत्यादि छः मन्त्रों से करन्यास 'ॐ श्रीं रां आपदामपहर्त्तारम् हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं रीं दातारम् शिरसे स्वाहा, ॐ रीं रूं सर्वसम्पदाम् शिखायै वषट्, ॐ श्रीं रैं लोकाभिरामम् कवचाय हुम्, ॐ श्रीं रौं श्रीरामम् नेत्रत्रयाय वौषट् तथा ॐ अहं सखा ते काकुत्स्थ अस्त्राय फट्' इन मन्त्रों से हृदयादि षडङ्ग न्यास करने के उपरान्त 'ब्रह्मा स्वयंभूर्भगवान् देवाश्चैव तपस्विनः। सिद्धिं दिशन्तु मे देवा सर्षिगणास्त्विह॥' इस मन्त्र से दिग्बन्ध करना चाहिये। फिर मूल में लिखित 'वामे भूमियुता' इत्यादि श्लोक से 'जिनके वाम भाग में पृथ्वी की पुत्री श्रीसीताजी विराजमान हैं तथा आगे श्री हनुमान् जी विराजमान हैं। पीछे श्री लक्ष्मण जी हैं। दोनों पार्श्वों में श्री शत्रुघ्न जी तथा श्री भरत जी हैं। वायव्य आदि चारो कोणों में क्रमशः सुग्रीव, विभीषण, अङ्गद तथा श्री जामवन्त जी स्थित हैं, इन सबके मध्य में नीलकोमल कमल के समान आभा वाले श्री श्यामल रामजी को मैं भजता हूँ।' इस प्रकार से ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके पाठ करना चाहिये।

रामायण-पाठहेतु सम्पुट मन्त्र—'आपदामपहर्त्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥' इस मन्त्र का सम्पुट लगाकर नवाह पाठ करना चाहिये। इस प्रकार के सम्पुटित पाठ से सकल कार्य सिद्ध होते हैं।

अथ बालकाण्डस्य ऋषिन्यासादिप्रयोगः—ॐ अस्य श्रीबालकाण्डमहामन्त्रस्य भगवान् ऋष्यशृङ्गऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। दाशरथिः परमात्मा देवता। रां बीजम्। नमः शक्तिः। रामायेति कीलकम्। श्रीरामप्रीत्यर्थे बालकाण्डे जपे विनियोगः। ॐ ऋष्यशृङ्गऋषये नमः शिरसि॥ १॥ ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे॥ २॥ ॐ दाशरथिपरमात्मदेवतायै नमः हृदये॥ ३॥ ॐ रां बीजाय नमः गुह्ये॥ ४॥ ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः॥ ५॥ ॐ रामाय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे॥ ६॥ इति ऋष्यादिन्यासः। ॐ सुप्रसन्नाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ १॥ ॐ शान्तमनसे तर्जनीभ्यां नमः॥ २॥ ॐ सत्यसन्धाय मध्यमाभ्यां नमः॥ ३॥ ॐ जितेन्द्रियाय अनामिकाभ्यां नमः॥ ४॥ ॐ धर्म्मिष्ठाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ५॥ ॐ राजदाशरथये जयिने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ६॥ इति करन्यासः। एवमेव हृदयादि षडङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत्। ध्यानम्—

श्रीराममाश्रितजनामरभूरुहेशमानन्दशुद्धमखिलामरवन्दिताङ्घ्रिम् ।
सीताङ्गनासुमिलितं सततं सुमित्रापुत्रान्वितं धृतधनुः शरमादिदेवम्॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य पुत्रकामनया 'ॐ रां रामाय नमः' इति मन्त्रेण सम्पुटितं बालकाण्डं पठेत्।

ॐ सुप्रसन्नः शान्तमनाः सत्यसन्धो जितेन्द्रियः। धर्मज्ञो नयसारज्ञो राजा दाशरथिर्जयी॥

इति मन्त्रेण वा सम्पुटितं दद्यात्। हनुमत्पूजापूर्वकं पारायणं कृत्वा काण्डान्ते पूर्वोक्तन्यासं कुर्य्यात्।

इति बालकाण्डपारायणम्।

बालकाण्ड के ऋष्यादि न्यास-प्रयोग—मूल में लिखित 'ॐ अस्य श्रीबालकाण्डमहामन्त्रस्य०' इत्यादि मन्त्र पढ़कर विनियोग करने के उपरान्त मूलोक्त 'ॐ ऋष्यशृङ्गऋषये नमः शिरसि' इत्यादि छः मन्त्रों से ऋष्यादि न्यास करने के पश्चात् 'ॐ सुप्रसन्नाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' इत्यादि छः मन्त्रों से करन्यास सम्पन्न कर 'ॐ सुप्रसन्नाय हृदयाय नमः, ॐ शान्तमनसे शिरसे स्वाहा, ॐ सत्यसन्धाय शिखायै वषट्, ॐ जितेन्द्रियाय कवचाय हुम्, ॐ धर्मज्ञाय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ राजा दाशरथये जयिने अस्त्राय फट्' इन छः मन्त्रों से हृदयादि षडङ्ग न्यास करना चाहिये। इस प्रकार षडङ्ग न्यास के उपरान्त ध्यान करना चाहिये। ध्यान-हेतु मूल में 'श्रीराममाश्रित०' इत्यादि मन्त्र लिखा है।

ध्यान का भावार्थ इस प्रकार है—श्रीराम अपने आश्रित जनों के लिये अमरभूरुह (कल्पवृक्ष) के समान अखिल आनन्द देने वाले हैं; वे सबके द्वारा वन्दित-चरण हैं। मैं सीताजी सुमिलित सतत रहने वाले, सलक्ष्मण धनुष-बाणधारी उन आदिदेव का ध्यान करता हूँ।

सम्पुट—बालकाण्ड का पाठ यदि पुत्रकामना से किया जाय तो 'ॐ रां रामाय नमः' मन्त्र से सम्पुटित करना चाहिये अथवा 'ॐ सुप्रसन्नः शान्तमनाः सत्यसिन्धो जितेन्द्रियः। धर्मज्ञो नयसारज्ञो राजा दाशरथिर्जयी॥' इस मन्त्र से प्रति- श्लोक को सम्पुटित करते हुए पाठ करना चाहिये। इससे ग्रहों का भय दूर होता है तथा पुत्र की प्राप्ति होती है।

अथ अयोध्याकाण्डस्य ऋषिन्यासादिप्रयोगः—ॐ अस्य श्रीअयोध्याकाण्डमहामन्त्रस्य भगवान् वसिष्ठ ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। भरतो दाशरथिपरमात्मा देवता। भं बीजम्। नमः शक्तिः। भरतायेति कीलकम्। मम भरतप्रसादसिद्ध्यर्थे अयोध्याकाण्डजपे विनियोगः। ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि॥ १॥ ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे॥ २॥ ॐ दाशरथि-भरतपरमात्मदेवतायै नमः हृदये॥ ३॥ ॐ भं बीजाय नमः गुह्ये॥ ४॥ ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः॥ ५॥ ॐ भरताय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे॥ ६॥ इति ऋष्यादिन्यासः। ॐ भरताय नमस्तस्मै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ १॥ ॐ रसज्ञाय तर्जनीभ्यां नमः॥ २॥ ॐ महात्मने मध्यमाभ्यां नमः॥ ३॥ ॐ तापसाय अनामिकाभ्यां नमः॥ ४॥ ॐ अतिशान्ताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ५॥ ॐ शत्रुघ्नसहिताय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ६॥ इति करन्यासः। एवमेव हृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत्। ध्यानम्—

श्रीरामपादद्वयपादुकान्तस्संसक्तचित्तं　　कमलायताक्षम्।
श्यामं　प्रसन्नवदनं　कमलावदाभं　शत्रुघ्नयुक्तमनिशं　भरतं　नमामि॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य ॐ भरताय नमः,

भरताय　नमस्तस्मै　सारज्ञाय　महात्मने। तापसायातिशान्ताय　शत्रुघ्नसहिताय　च॥

इति मन्त्रेण सम्पुटितमयोध्याकाण्डं लक्ष्मीकामनया पठेत्। तत उत्तरन्यासं पूर्ववत्कृत्वा पारायणं समापयेत्। इत्ययोध्याकाण्डपारायणम्॥ २॥

अयोध्याकाण्ड की पाठविधि—मूलोक्त 'ॐ अस्य श्रीअयोध्याकाण्डमहामन्त्रस्य०' इत्यादि मन्त्र से विनियोग करने के पश्चात् 'ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि' इत्यादि छः मन्त्रों से ऋष्यादि न्यास सम्पन्न कर 'ॐ भरताय नमः तस्मै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' इत्यादि छः मन्त्रों से करन्यास करे। तत्पश्चात् 'ॐ भरताय नमः तस्मै हृदयाय नमः, ॐ रसज्ञाय शिरसे स्वाहा, ॐ महात्मने शिखायै वषट्, ॐ तापसाय कवचाय हुम्, ॐ अतिशान्ताय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ शत्रुघ्नसहिताय अस्त्राय फट्' इस छः मन्त्रों से हृदयादि षडङ्ग न्यास सम्पन्न करके 'श्रीरामपादद्वयपादुकान्तस्संसक्तं०' इत्यादि मूलोक्त मन्त्र से ध्यान करे। ध्यान-भावार्थ—'श्रीराम की पादुकाद्वय से जिनका अन्तःकरण शीतल है, उन कमलनेत्र श्यामल, प्रसन्न मुख, कमल के समान आभा वाले शत्रुघ्नयुक्त श्री भरत को सदैव प्रणाम करता हूँ।' इस प्रकार से ध्यान कर मानसोपचारों से पूजन कर 'ॐ भं भरताय नमः' इत्यादि मूल-लिखित मन्त्र के द्वारा 'भरताय नमस्तस्मै सारज्ञाय महात्मने। तापसायातिशान्ताय शत्रुघ्नसहिताय च' इस मन्त्र से सम्पुटित करके अयोध्याकाण्ड का पाठ लक्ष्मीप्राप्ति की कामना से करना चाहिये। फिर पाठसमाप्ति पर उत्तरन्यास करके पारायण समाप्त करना चाहिये।

अथ किष्किन्धाकाण्डस्य ऋष्यादिन्यासः—ॐ अस्य श्रीकिष्किन्धाकाण्डमहामन्त्रस्य भगवान् ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सुग्रीवो देवता। सुं बीजम्। नमः शक्तिः। सुग्रीवेति कीलकम्। मम सुग्रीवप्रसादसिद्ध्यर्थे किष्किन्धाकाण्डपारायणे जपे विनियोगः। ॐ भगवदृषये नमः शिरसि॥ १॥ ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे॥ २॥ ॐ सुग्रीवदेवतायै नमः हृदये॥ ३॥ ॐ सुं बीजाय नमः गुह्ये॥ ४॥ ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः॥ ५॥ ॐ सुग्रीवेति कीलकाय नमः सर्वाङ्गे॥ ६॥ इति

ऋष्यादिन्यासः। ॐ सुग्रीवाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ १॥ ॐ सूर्यतनयाय तर्जनीभ्यां नमः॥ २॥ ॐ सर्ववानरपुङ्गवाय मध्यमाभ्यां नमः॥ ३॥ ॐ बलवते अनामिकाभ्यां नमः॥ ४॥ ॐ राघवसखाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ५॥ वशी रायं प्रच्छतु इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ६॥ इति करन्यासः। एवमेव हृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत्—

सुग्रीवमर्कतनयं कपिवर्यवन्द्यमारोपिताच्युतपदाम्बुजमादरेण।
पाणिप्रहारकुशलं बलपौरुषाढ्यमाशास्पदान्तनिपुणं हृदि भावयामि॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य 'ॐ सुं सुग्रीवाय नमः। सुग्रीवः सूर्यतनयः सर्ववानरपुङ्गवः। बलवान्राघवसखा वशी रायं प्रयच्छतु॥' इति मन्त्रेण सम्पुटितं पठेत्। नष्टराज्यप्राप्तिः। अन्यत्सर्वं पूर्ववत्। इति किष्किन्धाकाण्ड- पारायणम्।

किष्किन्धा काण्ड-प्रयोग—'ॐ अस्य किष्किन्धाकाण्डमहामन्त्रस्य०' इत्यादि मूलोक्त मन्त्र को पढ़कर विनियोग करने के बाद 'ॐ भगवद् ऋषये नमः शिरसि०' इत्यादि छः मूलोक्त मन्त्रों से ऋष्यादि न्यास सम्पन्न करे। फिर 'ॐ सुग्रीवाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' इत्यादि मन्त्रों के द्वारा करन्यास करके 'ॐ सुग्रीवाय हृदयाय नमः, ॐ सूर्यतनयाय शिरसे स्वाहा, ॐ सर्ववानरपुङ्गवाय शिखायै वषट्, ॐ बलवते कवचाय हुम्, ॐ राघवसखाय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ वशी रायं प्रयच्छतु अस्त्राय फट्' इन छः मन्त्रों से हृदयादि षडङ्ग न्यास करना चाहिये। तदनन्तर सूर्य के पुत्र, कपिवर्य के द्वारा वन्दित, जिनके मन में अच्युत के चरणकमलों में आदर है, जो पाणिप्रहार में कुशल हैं, बलपौरुष से सम्पन्न हैं, आशा के आस्पद हैं, अन्त में निपुणता प्रदर्शित करते हैं, उन सुग्रीव की अपने हृदय में भावना करता हूँ' इस प्रकार से ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके 'ॐ सुग्रीवाय नमः, सुग्रीवः सूर्यतनयः सर्ववानरपुङ्गवः। बलवान् राघवसखा वशी रायं प्रच्छतु' इस मन्त्र का सम्पुट लगाकर किष्किन्धा काण्ड का पाठ करे तो नष्ट राज्य की प्राप्ति होती है।

अथ वाल्मीकिरामायणस्य आरण्यकाण्डस्य ऋष्यादिन्यासप्रयोगः—ॐ अस्य श्रीआरण्यकाण्डमहामन्त्रस्य भगवान् ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीरामो दाशरथिः परमात्मा महेन्द्रो देवता। ईं बीजम्। नमः शक्तिः। इन्द्रायेति कीलकम्। इन्द्रप्रसादसिद्ध्यर्थे आरण्यकाण्डपारायणे जपे विनयोगः। ॐ भगवान् ऋषये नमः शिरसि॥ १॥ ॐ अनुष्टुपछन्दसे नमः मुखे॥ २॥ ॐ श्रीरामपरमात्मामहेन्द्रदेवतायै नमः हृदये॥ ३॥ ॐ ईं बीजाय नमः गुह्ये॥ ४॥ ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः॥ ५॥ ॐ इन्द्राय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे॥ ६॥ इति ऋष्यादिन्यासः। 'ॐ सहस्रनयनाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ १॥ ॐ देवाय तर्जनीभ्यां नमः॥ २॥ ॐ सर्वदेवनमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः॥ ३॥ ॐ दिव्यवज्रायुधाय अनामिकाभ्यां नमः॥ ४॥ ॐ महेन्द्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ५॥ ॐ शचीपतये करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ६॥ इति करन्यासः। एवमेव हृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत्—

शचीपतिं सर्वसुरेशवन्द्यं सर्वार्तिहर्तारमचिन्त्यशक्तिम्। श्रीरामसेवानिरतं महान्तं वन्दे महेन्द्रं धृतवज्रमीड्यम्॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य 'ॐ लं इन्द्राय नमः, सहस्रनयनं देवं सर्वदेवनमस्कृतम्। दिव्यवज्रधरं देवं महेन्द्रं च शचीपतिम्॥' इति मन्त्रेण सम्पुटितं पठेत्। अन्यत्पूर्ववदित्यारण्यकाण्डपारायणम्।

आरण्यकाण्ड-प्रयोगविधि—सर्वप्रथम 'ॐ अस्य श्रीआरण्यकाण्डमहामन्त्रस्य०' इत्यादि मूल पाठ में लिखित मन्त्र से जल छोड़कर विनियोग करे। तदुपरान्त 'ॐ भगवान् ऋषये नमः शिरसि' इत्यादि छः मन्त्रों से ऋष्यादि न्यास करे। फिर 'ॐ सहस्रनयनाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' इत्यादि छः मन्त्रों से करन्यास सम्पन्न करे। तदनन्तर 'ॐ सहस्रनयनाय हृदयाय नमः, ॐ देवाय शिरसे स्वाहा, ॐ सर्वदेवनमस्कृताय शिखायै वषट्, ॐ दिव्यवज्रायुधाय कवचाय हुम्, ॐ महेन्द्राय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ शचीपतये अस्त्राय फट्' इन छः मन्त्रों से हृदयादि षडङ्ग न्यास करे। तत्पश्चात् 'शचीपति इन्द्र के द्वारा वन्दित, सर्वार्तिहर्त्ता, अचिन्त्यशक्ति, श्रीरामजी की सेवा में निरत

महान् इन्द्र, जो वज्रधारी हैं, उनको पूजना चाहिये।' इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके सम्पुट मन्त्र—'ॐ लं इन्द्राय नमः, सहस्रनयनं देवं सर्वदेवनमस्कृतम्। दिव्यवज्रधरं देवं महेन्द्रं च शचीपतिम्॥' इस मन्त्र से सम्पुटित कर आरण्यकाण्ड के प्रत्येक श्लोक का पाठ करे। शेष सब पूर्ववत् करे।

अथ सुन्दरकाण्डस्य न्यासादिः—अस्य श्रीसुन्दरकाण्डमहामन्त्रस्य भगवान् हनुमान् ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। जगन्माता सीता देवता। श्रीं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। सीतायै कीलकं; सीताप्रसादसिद्ध्यर्थे सुन्दरकाण्डपारायणे जपे विनियोगः। ॐ भगवद्धनुमदृषये नमः शिरसि॥ १॥ ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे॥ २॥ ॐ जगन्माता सीतादेवतायै नमः हृदये॥ ३॥ ॐ श्रीं बीजाय नमः गुह्ये॥ ४॥ ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः॥ ५॥ ॐ सीतायै कीलकाय नमः सर्वाङ्गे॥ ६॥ इति ऋष्यादिन्यासः। ॐ सीतायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ १॥ ॐ विदेहराजसुतायै तर्जनीभ्यां नमः॥ २॥ ॐ रामसुन्दर्यै मध्यमाभ्यां नमः॥ ३॥ ॐ हनुमता समाश्रितायै अनामिकाभ्यां नमः॥ ४॥ ॐ भूमिसुतायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ५॥ ॐ शरणं भजे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ६॥ इति करन्यासः। एवमेव हृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत्। ध्यानम्—

सीतामुदारचरितां विधिसाम्बविष्णुवन्द्यां त्रिलोकजननीं शतकल्पवल्लीम्।
हैमैरनेकमणिरञ्जितकोटिभागैर्भूषाचयैरनुदिनं सहितां नमामि॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य 'ॐ श्रीं सीतायै नमः' इति मन्त्रेण सम्पुटितं पठेत्। सर्वकार्य्यसिद्धिः। अन्यत्पूर्ववत्। इति सुन्दरकाण्डपारायणम्॥ ५॥

सुन्दरकाण्ड अनुष्ठान-विधि—सर्वप्रथम मूल में लिखित 'अस्य सुन्दरकाण्डमहामन्त्रस्य' इत्यादि से विनियोग करे। फिर 'ॐ भगवद् हनुमत् ऋषये नमः शिरसि' इत्यादि छः मन्त्रों से ऋष्यादि न्यास करे। फिर मूलोक्त 'ॐ सीतायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' इत्यादि छः मन्त्रों से उनमें निर्दिष्ट अङ्गों में करन्यास करे। तदुपरान्त 'ॐ सीतायै हृदयाय नमः, ॐ विदेहराजसुतायै शिरसे स्वाहा, ॐ रामसुन्दर्यै शिखायै वषट्, ॐ हनुमता समाश्रितायै कवचाय हुम्, ॐ भूमिसुतायै नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ शरणं भजे अस्त्राय फट्' इन मन्त्रों से हृदयादि न्यास करे। तत्पश्चात् 'उदारचरिता सीता को जो ब्रह्मा, शक्ति तथा विष्णु के द्वारा वन्दित तीनों लोकों की माता शतकल्पवल्ली है, जो स्वर्ण तथा कोटि-कोटि मणियों से जटित भूषा को अनुदिन वृद्धि के साथ हैं, उनको नमस्कार करता हूँ।' इस प्रकार ध्यान कर मानसपूजन कर 'ॐ सीतायै नमः' इस मन्त्र से (अथवा 'रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम। भो दशस्यान्तकं अस्माकं रक्षां देहि श्रियं च ते॥' इस मन्त्र से) सम्पुटित पाठ करने से सर्वकार्य-सिद्धि होती है। अन्य सब पूर्ववत् है।

अथ युद्धकाण्डस्य न्यासादि—अस्य श्रीयुद्धकाण्डमहामन्त्रस्य विभीषण ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। विधाता देवता। बं बीजम्। नमः शक्तिः। विधातेति कीलकम्। श्रीधातृप्रसादसिद्ध्यर्थे युद्धकाण्डपारायणे जपे विनियोगः। ॐ विभीषणऋषये नमः शिरसि॥ १॥ ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे॥ २॥ ॐ विधातृदेवतायै नमः हृदये॥ ३॥ ॐ बं बीजाय नमः गुह्ये॥ ४॥ ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः॥ ५॥ ॐ विधातेति कीलकाय नमः सर्वाङ्गे॥ ६॥ इति ऋष्यादिन्यासः। ॐ विधात्रे अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ १॥ ॐ महादेवाय तर्जनीभ्यां नमः॥ २॥ ॐ भक्तानामभयप्रदाय मध्यमाभ्यां नमः॥ ३॥ ॐ सर्वदेवप्रीतिकराय अनामिकाभ्यां नमः॥ ४॥ ॐ भगवत्प्रियाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ५॥ ॐ ईश्वराय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः॥ ६॥ इति करन्यासः। एवमेव हृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

अथ ध्यानम्—

देवं विधातारमनन्तवीर्यं भक्ताभयं श्रीपरमादिदेवम्। सर्वामरप्रीतिकरं प्रशान्तं वन्दे सदा भूतपतिं सुभर्तुम्॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य ॐ वं विधात्रे नमः॥ १॥

विधातारं महादेवं भक्तानामभयप्रदम्। सर्वदेवप्रीतिकरं भगवत्प्रियमीश्वरम्॥

इति मन्त्रेण सम्पुटितं पठेत्। (शत्रोः पराभवो विजयश्च) अन्यत्सर्वं पूर्ववत्। इति युद्धकाण्डपारायणम्॥ ६॥ उत्तरकाण्डस्यापि ऋष्यादिन्यासं षडङ्गन्यासं चैतदेव ज्ञातव्यम्।

लङ्काकाण्ड की पारायण-विधि—सर्वप्रथम 'अस्य श्रीयुद्धकाण्डमहामन्त्रस्य०' इत्यादि मूलोक्त मन्त्र पढ़कर विनियोगार्थ जल छोड़ना चाहिये। फिर मूलोक्त 'ॐ विभीषणऋषये नमः शिरसि' इत्यादि छः मन्त्र पढ़कर ऋष्यादि न्यास करके 'ॐ विधात्रे अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' इत्यादि छः मूलोक्त मन्त्र पढ़कर अङ्गुष्ठादि ५ कराङ्गों में न्यास करना चाहिये। तदुपरान्त 'ॐ विधात्रे हृदयाय नमः, ॐ महादेवाय शिरसे स्वाहा, ॐ भक्तानामभयप्रदाय शिखायै वषट्, ॐ सर्वदेवप्रीतिकराय कवचाय हुम्, ॐ भगवत्प्रियाय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ईश्वराय अस्त्राय फट्' इन छः मन्त्रों से हृदयादि षडङ्ग न्यास सम्पन्न करना चाहिये। फिर इस प्रकार ध्यान करना चाहिये।

विधाता, अनन्त वीर्यशाली भक्तों को अभय देनेवाले परम आदिदेव, प्रीति करने वाले, प्रशान्त भूतपति उत्तम स्वामी का ध्यान करता हूँ। इस प्रकार ध्यान करने के उपरान्त सम्पुट मन्त्र से सम्पुटित कर युद्धकाण्ड का पाठ आरम्भ करना चाहिये। इससे शत्रु का नाश होता है। सम्पुट से पूर्व मानसपूजा करनी चाहिये। सम्पुटमन्त्र है—

विधातारं महादेवं भक्तानामभयप्रदम्। सर्वदेवप्रीतिकरं भगवत्प्रियमीश्वरम्॥

उत्तरकाण्ड का अनुष्ठान—उत्तरकाण्ड के विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान तथा सम्पुट आदि सब लङ्काकाण्ड की भाँति ही करना चाहिये।

नवाहपारायणदिनसङ्ख्या

पुनर्वसुनक्षत्रादारभ्य आर्द्रापर्यन्तं सप्तकाण्डपाठः। इत्येकः पक्षः॥ १॥ प्रतिपदमारभ्य नवरात्रं पठेत्। इति द्वितीयः॥ २॥ चत्वारिंशद्दिनैः पाठः। इति तृतीयः॥ ३॥ यथारुचि कार्यः। सुन्दरकाण्डे एकोत्तरावृत्त्या पाठः कर्त्तव्यः। यथा प्रथमदिने एकः द्वितीये द्वौ तृतीये त्रय इत्यादि एकादशदिनपर्यन्तम्। द्वादशदिने अवशिष्टं सर्गद्वयं पठित्वा पुनः प्रथमसर्गः पठनीयः। एवं त्रिरावृत्त्या सकलकार्यसिद्धिः। श्रीहनुमत्प्रतिमासमीपे सुन्दरकाण्डपाठाच्छीघ्रकार्यसिद्धिः। पाठश्च तन्मनसैव कार्यः। इति श्रीवाल्मीकिरामायणपारायणविधानम्।

रामायण-पारायण की दिनसंख्या—सम्पूर्ण वाल्मीकि रामायण के पारायण की दिनसंख्या के सम्बन्ध में तीन पक्ष प्राप्त होते हैं—

सत्ताईस दिन के पाठ का पक्ष—इस मत के अनुसार किसी भी मास-पक्ष में जिस दिन पञ्चाङ्ग में पुनर्वसु नक्षत्र हो, उस दिन से आरम्भ कर जब आर्द्रा नक्षत्र आये (२७ या २८ दिन पश्चात्) तब तक सम्पूर्ण रामायण का पाठ समाप्त करे—यह एक मत है।

चालीस दिन के पाठ का पक्ष—चालीस दिनों में सभी सात काण्डों का पाठ करना चाहिये, यह दूसरा पक्ष है।

नवाह पाठ—शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ करके नवमी-पर्यन्त (चैत्र-पौष-आषाढ़-आश्विन) में नौ दिनों में पाठ करना भी एक मत है।

सुन्दरकाण्ड के पाठ में विशेष—सुन्दरकाण्ड का पाठ ग्यारह दिनों तक एकोत्तर वृद्धि से करना चाहिये। जैसे प्रथम दिन एक पाठ, द्वितीय दिन दो पाठ, तृतीय दिन तीन पाठ, चतुर्थ दिन चार पाठ—इस प्रकार से ग्यारहवें दिन ग्यारह पाठ होंगे। इस प्रकार ग्यारह दिनों में सुन्दरकाण्ड के सर्गपाठ की कुल संख्या १+२+३+४+५+६+७+८+९+१०+११=६६ (छियासठ) होगी। यह संख्या सर्गों की होती है। तात्पर्य यह कि पहिले दिन एक सर्ग, दूसरे दिन दो सर्ग का पाठ करे। इस प्रकार से ग्यारह दिन में छियासठ सर्ग का पाठ हो जायेगा। बारहवें दिन केवल दो सर्ग बचेंगे; क्योंकि सुन्दरकाण्ड में कुल ६८ (अड़सठ) सर्ग हैं। उनका पाठ बारहवें दिन करके उसी दिन पुनः प्रथम सर्ग से पाठ की दूसरी आवृत्ति प्रारम्भ करनी चाहिये। ऐसी तीन आवृत्ति पूरी करने पर सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि होती है। श्री हनुमान् जी की मूर्ति के समीप में सुन्दरकाण्ड के पाठ से शीघ्र सफलता मिलती है। पाठ तन्मयता के साथ करना चाहिये।

रामायण-पाठ के नियम—विद्वानों द्वारा रामायण पाठ के लिये भी कुछ नियम निर्धारित किये गये हैं। यथा—एक बार पाठ आरम्भ हो जाने पर पूरे सर्ग के पाठ के उपरान्त ही विराम लेना चाहिये। मध्यम स्वर से सुस्पष्ट उच्चारण कर श्रद्धा एवं प्रेमपूर्वक रामायण का पाठ करना चाहिये। गा करके, शिर हिलाकर, जल्दी-जल्दी तथा अर्थ को बिना जाने पाठ नहीं करना चाहिये। नवाह पाठ के सायङ्कालीन विश्राम स्थल पूर्व में बताये जा चुके हैं। नवाह के विराम स्थलों की सूचना एक मत के अनुसार निम्नाङ्कित भी उपलब्ध होती है—

उद्योगं रामराज्यस्य भरतोद्योगमेव च। मारीचस्य वधं यावत् सुग्रीवपुरवेशनम्॥
लक्ष्मणस्य ततो यावत् त्रिजटास्वप्नदर्शनम्। रावणस्य ततो यात्रा जयार्थं देवसद्मसु॥
समुद्रावतरणं यावत् निकुम्भवधमेव च। तथा पूर्णकथां कुर्यात् नवमेऽह्नि सर्वदा॥
(इस पारायण में उत्तरकाण्ड सम्मिलित नहीं है)।

इसी प्रकार से उपासना ग्रन्थों में सुन्दरकाण्ड पाठ की एक और भी विधि वर्णित है, जिसके अनुसार प्रथम दिन से तेरह दिन तक प्रतिदिन पाँच सर्ग का पाठ करे। इससे १३×५=६५ सर्ग का पाठ हो जायेगा। चौदहवें दिन अवशिष्ट तीन सर्गों को पढ़कर फिर सुन्दरकाण्ड का प्रथम तथा द्वितीय सर्ग पढ़ना चाहिये।

अध्यात्मरामायणपाठविधानम्

ॐ अस्य श्रीमदध्यात्मरामायणे अमुककाण्डमहामालामन्त्रस्य श्रीभगवान् सदाशिव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीरामः परमात्मा देवता। ॐ नमो नारायणायेति बीजम्। दाशरथिरिति शक्तिः। रावणघ्न इति कीलकम्। 'मम अमुककामना-सिद्ध्यर्थममुकमन्त्रस्य सम्पुटीकरणसहितामुककाण्डपाठं करिष्ये' इति सङ्कल्प्य पारायणादौ पूर्वोक्तभूतशुद्धिमातृका-न्यासादि कर्म कुर्यात्। ॐ श्रीभगवत्सदाशिवऋषये नमः शिरसि॥ १॥ ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे॥ २॥ ॐ श्रीरामपरमात्मदेवतायै नमः हृदये॥ ३॥ ॐ नमो नारायणायेति बीजाय नमः गुह्ये॥ ४॥ ॐ दाशरथिशक्तये नमः पादयोः॥ ५॥ ॐ रावणघ्नकीलकाय नमः सर्वाङ्गे॥ ६॥ मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। अथ करन्यासः—ॐ रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ १॥ ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः॥ २॥ ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः॥ ३॥ ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः॥ ४॥ ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ५॥ ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ ६॥ इति करन्यासः। एवमेव हृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा ॐ रांरींरूंरैंरौंरः इति मन्त्रेण दिग्बन्धं कुर्यात्। अथ ध्यानम्—

नीलेन्दीवरतुल्यश्यामवदनं पीताम्बरालङ्कृतं मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरां विद्युन्निभां राघवम्।
पश्यन्तीं मुकुटाङ्गदादिविविधैः कल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे श्रीमद्दाशरथिं नमामि सुतरामब्धौ प्लवं दुस्तरे॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य यथाकामनया मन्त्रसम्पुटितपाठं कुर्यात्। एतन्न्यासादिककर्म प्रतिकाण्डं कार्यम्। (सम्पुटीकरण मन्त्राः)—ॐ श्रीरामचन्द्राय स्वाहा॥ १॥ ॐ क्लीं नमः श्रीरघुनाथाय॥ २॥ ॐ जयजय रावणान्तकाय॥ ३॥ ॐ नमः सीतापतये नमः॥ ४॥ ॐ लक्ष्मणाग्रजाय नमः॥ ५॥ ॐ भरतशत्रुघ्नसेवितचरणाय नमः॥ ६॥ ॐ रां रामाय नमः॥ ७॥ एषामन्यतमेन सम्पुटीकृत्य पाठं कुर्यात्सर्वकार्यसिद्धिः। इत्यध्यात्मरामायणपारायणविधानम्।

अध्यात्मरामायण पारायण-विधान—सर्वप्रथम 'ॐ अस्य श्रीमद् अध्यात्मरामायणमहामन्त्रस्य श्री भगवान् सदाशिवऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीरामः परमात्मा देवता। ॐ नमो नारायणेति बीजं दाशरथिः शक्तिः। रावणघ्न इति कीलकं ममाभीष्टसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः' कहकर विनियोग करे। सङ्कल्प आचमन प्राणायाम कर 'मम अमुककामनासिद्ध्यर्थं अमुकमन्त्रस्य सम्पुटीकरणसहितामुककाण्डपाठं करिष्ये (वा सम्पूर्ण पाठं करिष्ये)' ऐसा सङ्कल्प करे। पारायण के प्रारम्भ में भूतशुद्धि मातृकान्यासादि कर्म करे। फिर मूलोक्त 'ॐ रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' इत्यादि छः मन्त्रों से अङ्गुष्ठादि में करन्यास करने के उपरान्त 'ॐ रां हृदयाय नमः, ॐ रीं शिरसे स्वाहा, ॐ रूं शिखायै वषट्, ॐ रैं कवचाय हुम्, ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ रः अस्त्राय फट्' इन छः मन्त्रों से हृदयादि षडङ्ग न्यास करे। तदनन्तर 'ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः' इस मन्त्र से दिग्बन्ध (चुटकी बजाये) करे।

इसके पश्चात् 'नीलकमल के समान श्याम वदन, पीताम्बर से अलंकृत, ज्ञानमयी मुद्रा को धारण किये, दूसरी बिजली के समान कान्ति वाले राघव को देखती हुई मुकुट, बाजूबन्द आदि के कल्प से उज्ज्वल अङ्ग के दाशरथि राम जो कि दुस्तर भवसागर से पार करने वाले हैं, उनको भजता हूँ।' इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारों से पूजकर यथाकामना वाले मन्त्र से सम्पुटित पाठ करे। सम्पुट के मन्त्र हैं—(१) ॐ श्रीरामचन्द्राय स्वाहा। (२) ॐ क्लीं नमः श्रीरघुनाथाय। (३) ॐ जय-जय रावणान्तकाय। (४) ॐ नमः सीतापतये नमः। (५) ॐ लक्ष्मणाग्रजाय नमः। (६) ॐ भरतशत्रुघ्नसेवितचरणाय नमः॥ ७॥ ॐ रां रामाय नमः।' इन सात मन्त्रों में से किसी एक का उपयोग सम्पुट में करना चाहिये।

वेदव्यासमन्त्रानुष्ठानप्रयोगः

मन्त्रमहोदधौ मन्त्रो यथा—'व्यां वेदव्यासाय नमः' इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः। अस्य वेदव्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सत्यवतीसुतवेदव्यासो देवता। व्यां बीजम्। नमः शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि॥ १॥ ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे॥ २॥ ॐ सत्यवतीसुतवेदव्यासदेवतायै नमः मुखे॥ ३॥ ॐ व्यां बीजाय नमः गुह्ये॥ ४॥ ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः॥ ५॥ इति ऋष्यादिन्यासः। अथ षडङ्गन्यासः—ॐ व्यां हृदयाय नमः॥ १॥ ॐ व्यीं शिरसे स्वाहा॥ २॥ ॐ व्यूं शिखायै वषट्॥ ३॥ ॐ व्यैं कवचाय हुम्॥ ४॥ ॐ व्यौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ५॥ ॐ व्यः अस्त्राय फट्॥ ६॥ इत्यङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत्। अथ ध्यानम्—

व्याख्यामुद्रिकया लसत्करतलं सद्योगपीठस्थितं वामे जानुतले दधानमपरं हस्ते सुविद्यानिधिम्।
विप्रव्रातवृत्तं प्रसन्नमनसं पाथोरुहाङ्गद्युतिं पाराशर्य्यमतीव पुण्यचरितं व्यासं स्मरेत्सिद्धये॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य पूर्वोक्ते धर्मादियुक्ते पीठे आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैर्मूलेन वेदव्यासं सम्पूज्य आवरणपूजनं कुर्यात्।

तद्यथा—षट्कोणे आग्नेयादिकोणकेसरेषु मध्ये दिक्षु च पूर्वोक्तानि हृदयादिषडङ्गानि सम्पूज्य तद्बहिरष्टदलेषु प्राचीक्रमेण—ॐ पैलाय नमः॥ १॥ ॐ वैशम्पायनाय नमः॥ २॥ ॐ जैमिनये नमः॥ ३॥ ॐ सुमन्तवे नमः॥ ४॥ (दिग्दलेषु) ॐ शुक्राय नमः॥ ५॥ ॐ रोमहर्षणाय नमः॥ ६॥ ॐ उग्रश्रवसे नमः॥ ७॥ ॐ अन्येभ्यो मुनिभ्यो

नमः ॥ ८ ॥ इति पूजयेत्। ततो बाह्ये चतुरस्रे भूपुरे पूर्वादिदशदिक्षु इन्द्रादिदशदिक्पालान् तद्बहिर्वज्राद्यायुधानि च पूजयेत्। ततो धूपादिनमस्कारान्तपूजां समाप्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमष्टसहस्रजपः। जपान्ते दशांशेन पायसहोमः। तद्दशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशतो ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्।

तथा च—

जपेदष्टसहस्राणि पायसैर्होममाचरेत्। एवं सिद्धमनुर्मन्त्री कवित्वं शोभनाः प्रजा॥
व्याख्यानशक्तिं कीर्तिं च लभते सम्पदां चयम्। मृत्युञ्जयेन पुटितं यो व्यासस्य मनुं जपेत्॥
सर्वोपद्रवसन्त्यक्तो लभते वाञ्छितं फलम्।

मृत्युञ्जयसम्पुटितो मन्त्रः—ॐ जूँ सः व्यां वेदव्यासाय नमः सः जूँ ॐ।

मृत्युञ्जयस्य मन्त्रोऽयं त्रिवर्णो मृत्युनाशनः॥
जप्तोयं केवलो नृणामिष्टसिद्धिं प्रयच्छति। किंपुनस्तेन पुटितो वेदव्यासमनूत्तमः॥

इति वेदव्यासमन्त्रपुरश्चरणं समाप्तम्।

वेदव्यास मन्त्रानुष्ठान-प्रयोग—'ॐ व्यां वेदव्यासाय नमः' यह आठ अक्षरों का मूल मन्त्र है। सर्वप्रथम 'अस्य वेदव्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सत्यवतीसुतवेदव्यासो देवता। व्यां बीजं। नमः शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः' इस मन्त्र से विनियोग करे। 'ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि' इत्यादि पाँच मन्त्रों से ऋष्यादि न्यास करे। तदनन्तर 'ॐ व्यां हृदयाय नमः, ॐ व्यीं शिरसे स्वाहा, ॐ व्यूं शिखायै वषट्, ॐ व्यैं कवचाय हुम्, ॐ व्यौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ व्यः अस्त्राय फट्' इन मन्त्रों से षडङ्ग न्यास करके इस प्रकार ध्यान करे—जिनके करतल की हथेली व्याख्यामुद्रा को धारण किये है। सद्योगपीठ पर जो विराजमान हैं, वाम जानुतल पर स्थित हस्त में सुविद्यानिधि धारित है। जो विप्रवृन्द से परिवृत्त हैं। प्रसन्न मन वाले, पाथोरुह (सूर्य) के समान द्युतियुक्त शरीर वाले, पाराशर के पुत्र अत्यन्त पुण्य चरित्र वाले व्यास का स्मरण सिद्धिहेतु करे।' इस प्रकार से ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके पूर्व में जो पीठ वर्णित है, उसके पीठदेवताओं को पूजकर फिर उसके आवरणों की पूजा करे।

यन्त्रपूजन—षट्कोण में आग्नेयादि केसरों में, मध्य तथा दिशाओं में हृदयादि छः अङ्गों का पूजन करे। फिर बाहर के अष्टदल में प्रथम पूर्वादि चार दिशाओं में क्रम से मूलोक्त 'ॐ पैलाय नमः' इत्यादि चार मन्त्रों से पूजा करे। फिर चारो कोनों में 'ॐ शुक्राय नमः' आदि चार मन्त्रों से पूजा करे। फिर बाहर के चौकोर (चतुरस्र) भूपुर में पूर्वादि दिशाओं में इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा उनके समीप उनके वज्रादि आयुधों का भी पूजन करना चाहिये। फिर धूपादि नमस्कारान्त पूजा को समाप्त कर जप प्रारम्भ करना चाहिये।

पुरश्चरण—व्यासमन्त्र का पुरश्चरण आठ सहस्र जप से होता है। जप के अन्त में दशांश होम, तद्दशांश तर्पण, तद्दशांश मार्जन तथा तद्दशांश ब्राह्मणभोजन कराना चाहिये। जो पायस के द्वारा जप का दशांश होमादि करता है, उसको यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, उसके व्याख्यान शक्ति तथा सम्पदा की वृद्धि होती है। जो मृत्युञ्जय से सम्पुटित मन्त्र (ॐ जूं सः व्यां वेदव्यासाय नमः सः जूँ ॐ) का जप करता है, उसके सभी उपद्रव नष्ट होकर वाञ्छित फल की प्राप्ति होती है। यह मन्त्र मृत्युनाशक है। केवल 'ॐ जूँ सः' तीन अक्षर का मन्त्र जपने से ही सभी काम बनते हैं तब फिर वेदव्यास मन्त्र के सम्पुट के साथ जपने का तो कहना ही क्या है। यह जप पुराण कथावाचकों तथा धार्मिक प्रवचनकर्त्ताओं को अनुष्ठान करने से सफलता देने वाला है।